



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुख्यपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 10 • 13 - 19 दिसंबर, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-12-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

अर्हत उवाच

अहिमरणं ण
करेज्ज पंडिए

पंडित वह होता है जो
कलह नहीं करता।

राग और द्वेष होते हैं पाप कर्म के मूल कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

कापरेन, ६ दिसंबर, २०२१

जैन धर्म के प्रभावक आचार्य आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी ध्वल सेना के साथ अनरेटा से १५ किमी का प्रलंब विहार कर कापरेन स्टेशन स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी जो जितने भी पाप करता है, उसकी नींव-पृष्ठभूमि में राग-द्वेष के भाव होते हैं। सारे पापों का मूल राग-द्वेष है। शास्त्र में कहा गया है कि कर्म के बीज राग और द्वेष हैं। ये दो न हों तो आदमी कोई भी पाप नहीं कर सकता। झूठ, चोरी, हिंसा की पृष्ठभूमि में भी राग-द्वेष के ही भाव होते हैं।

कहीं द्वेष की प्रधानता हो सकती है, कहीं राग की प्रधानता हो सकती है। राग-द्वेष की न्यूनता आने पर आदमी धर्माचरण कर सकता है। आदमी न चाहते हुए भी कई बार अपराध में चला जाता है। पाप से बचने के लिए हमें यह करना चाहिए कि मेरे राग-द्वेष के भाव पतले पड़ें। अनुप्रेक्षा-जप से राग-द्वेष के भाव पतले



किए जा सकते हैं। माला फेरने के पीछे भी एक दर्शन है। धर्म के जितने अनुष्ठान हैं, इनसे राग-द्वेष कमजोर पड़ता है। मूल नहीं

है तो पुष्प-फल नहीं लगेंगे।

समरांग में युद्ध शुरू होने से पहले आदमी के दिमाग में युद्ध शुरू हो जाता है।

भाव जगत मूल है। कार्मण शरीर भी मूल

है। कर्म शरीर तो हर संसारी जीव के होता है। इसके कारण ही तेजस और औदारिक

शरीर होता है। कभी-कभी सही आदमी भी गलत आरोपों में फँसा दिया जाता है, मिथ्या आरोप दंड लगा दिया जाता है।

आदमी झूठा आरोप जिंदगी में किसी पर न लगाए। इससे हमारी चेतना निर्मल रहती है। झूठा आरोप भी एक पाप है। हँस-हँस के किए हुए पाप हैं, वो रोने पर नहीं छूटते हैं, इसलिए पाप करने से बचें। किसी को दुःखी देखकर खुशी मत मनाओ और दूसरों को सुखी देखकर हमें दुःखी नहीं होना चाहिए।

यह मानव जीवन है, इसको अच्छी तरह से जीएँ। वर्तमान में तो मानव जीवन मिला हुआ है, पर लंबा काल नहीं है। अपने कल्याण के बारे में सोचें और पापों से बचने का प्रयास करें, ताकि आत्मा अच्छी बन सके।

पूज्यप्रवर ने स्थानीय गाँव के लोगों को अहिंसा यात्रा के तीन संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने करते हुए बताया कि हमें क्रोध से बचना चाहिए। क्रोध-अहंकार हमारे शत्रु हैं। हम प्रमाद से दूर रहें।

प्रतिभा, पुरुषार्थ और सुयोग्य शिक्षक से विद्यार्थी का समुचित विकास होता है : आचार्यश्री महाश्रमण



कोटा, ३ दिसंबर, २०२१

ज्योतिचरण आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कोटा प्रवास के द्वितीय दिन मंगल देशना देते हुए फरमाया कि स्वाध्याय एक गरिमापूर्ण अर्थ वाला शब्द है। शब्द और अर्थ इन दोनों का गहरा संबंध होता है। शब्द अपने आपमें जड़ है, परंतु जड़ शब्द में एक प्रकार की अर्थात्मा होती है। वह कैसी है, उसका अपना महत्त्व होता है।

शब्द का अपना-अपना अर्थ होता है। विकास शब्द उपयोगी है, तो मूर्ख शब्द भी उपयोगी हो सकता है। स्वाध्याय शब्द का अपना अर्थ है—स्वा-ध्याय। मैं स्वाध्याय शब्द के अनेक रूपों में अर्थ कर सकता हूँ। स्वा + अध्याय इति स्वाध्याय। अपना अध्ययन करना स्वाध्याय होता है। मेरे में दूसरे महापुरुष जैसे कितने गुण हैं, इसको जानना स्वाध्याय है। कोई बात की प्रतिक्रिया न करना स्वाध्याय है, यह एक प्रसंग से समझाया।

स्वाध्याय का दूसरा अर्थ करता हूँ—सु-आ-अध्याय। सु यानी अच्छा। आ यानी चारों ओर से परिव्रतः और अध्याय यानी अध्याय करना। कोई अच्छी बात पड़ें उस पर मनन करें। जैन वाड्मय में अध्याय को बहुत महत्त्व दिया गया है। स्वाध्याय से ज्ञान, एक प्रकार का प्रकाश मिलता है। इसलिए हमें जीवन में जितनी अनुकूलता हो, स्वाध्याय का प्रयास करना चाहिए।

कंठस्थ ज्ञान का पुनरावर्तन करना भी स्वाध्याय है। जैन दर्शन में चतुर्दश पूर्वी जो हुए हैं, छः श्रुत केवली भी बताए गए हैं। उनके पास कितना ज्ञान होता है और कैसे वो थोड़ी सी देर में अपने ज्ञान का पुनरावर्तन कर लेते होंगे। आज भी बहुत ज्ञान किया जा सकता है। मति श्रुत ज्ञान का क्षयोपशम होता है, तो व्यक्ति वैदुष्य संपन्न बन सकता है।

स्वाध्याय करने में कई बाधाएँ भी होती हैं। बड़ी बाधा है—आलस्य। आदमी प्रमाद न करे। स्वाध्याय में

हमारे चतुर्थार्थी पूज्य जीतगणी को मुनि हेमराज जी स्वामी का योग मिला था। पर क्षयोपशम तो खुद का ही होना चाहिए। ‘गुरु बेचारा क्या करे, जब चेते में खोट’। प्रतिभा स्वयं की है, गुरु ज्ञान दे सकता है। विद्यार्थी में प्रतिभा भी हो, पुरुषार्थ भी और शिक्षक भी योग्य मिल जाए इस त्रिआयामी व्यवस्था से वह ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)



♦ व्यक्ति अनावश्यक बोलने से बचे। कब बोलना व कब मौन रखना सापेक्ष बात है। कब, कहाँ व कैसे बोलना—इसका विवेक अपेक्षित है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

स्वाद और विवाद में संयम रखने से हो सकता है आत्मकल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण



कोटा, 2 दिसंबर, 2021

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना सहित अहिंसा यात्रा के साथ स्टोन नगरी कोटा पधारे। कोटा कोटिंग और कचौरी के लिए भी प्रसिद्ध है। जन-जन को जगाने वाले महापुरुष के कोटा पदार्पण पर आज जन-जन ही पुलकित नहीं है, पर प्रकृति भी पुलकित है। कोटा शिक्षा की नगरी है। आचार्यप्रवर अध्यात्म की विद्या सिखाने वहाँ पधारे हैं।

जन-जन के उद्बोधक परम पावन ने अमृत देशना की वर्षा कोटावासियों पर करते हुए फरमाया कि मनुष्य इंद्रियों वाला प्राणी है। इसके पास पाँच ज्ञानेंद्रियाँ हैं। पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी होती हैं। ज्ञानेंद्रियाँ ज्ञान की माध्यम बनती हैं और इंद्रियों के द्वारा आदमी काम-भोग आसेवन भी कर सकता है।

इंद्रियों का समुचित संयम रखना आत्मा के लिए हितकर होता है। आदमी कान, ऊँख, नाक, रस, स्पर्श का संयम रखें। साधु का जीवन तो संयममय होना चाहिए। साधुओं का अलग जगत-परिवेश है। गृहस्थ के जीवन में भी इंद्रिय संयम

प्रतिभा, पुरुषार्थ और सुयोग्य शिक्षक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विद्यार्थी अनावश्यक बातें या हँसी-मजाक में न रहे, इन बाधाओं से उपरत रहने का प्रयास हो। ज्ञान के साथ आचार भी अच्छा हो। कोरा ज्ञान आधा है, साथ में आचरण भी जुड़ जाए तो परिपूर्णता उस संदर्भ में आ सकती है। आचरणों में हमारी भावशुद्धि हो।

उपाध्याय विनय विजय जी ने कहा है कि एक विद्वान है, उसमें भावात्मक अच्छा विकास नहीं है, तो विद्वान लोग के दिमाग में भी शांति नहीं रहती। सुख भी होता है। ज्ञान के साथ भावात्मक विकास का बहुत महत्व है। I-Q के साथ E-Q का भी विकास हो। हम ज्ञान का विकास करें, साथ में भावात्मक-आचरणात्मक विकास का क्रम अच्छा रहे तो हम इस जीवन में नहीं, आगे के जीवन में भी अच्छी स्थिति का निर्माण कर सकते हैं।

आज चतुर्दशी है। चतुर्दशी को हमारे यहाँ धार्मिक स्थिति के रूप में सम्मान है। आज हाजरी का वाचन होता है। मर्यादावली का पुनरार्वतन होता है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया। मुनि कुमारश्रमण जी ने लेख पत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें ५९ कल्याणक बख्तीश करवाए।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि हमारा जीवन हमारे हाथ में है, हम जीवन को जैसा चाहते हैं, जो सकते हैं। जो व्यक्ति प्रतिक्रिया विरक्ति का जीवन जीता है, वो स्वतंत्र जीता है। जो व्यक्ति प्रतिक्रिया युक्त जीवन जीता है, उसका जीवन परतंत्र हो जाता है। हम नकारात्मक सोच से किसी के हाथ की कठपुतली न बनें।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि गुरु की सुश्रुता करने से सुगति प्राप्त होती है, ज्ञान मिलता है।

है। यह एक प्रसंग से समझाया।

प्रवचन जो करता है, उससे उसको तो लाभ हो ही जाता है, पर दूसरों में परिवर्तन आए न आए वो अलग बात है। श्रोता है, उसको प्रवचन का लाभ मिले, न भी मिले, किंतु वक्ता है, साधु है, उसको तो निर्जरा का लाभ मिल ही जाता है। हजारों लोग भी प्रवचन सुनते हैं, पता नहीं कितनों के मन में बदलाव आ सकता है। बदलाव क्यों नहीं आता है, उसको एक प्रसंग से समझाया कि बात गहराई से अंदर जाए भी तो असर करेगी।

देखना है तो क्या देखें, क्यों देखें, कैसे देखें? अच्छी चीज देखो, बुरी चीज मत देखो। अच्छे साहित्य को पढ़ें। संतों के दर्शन करें। देखने से भीतर में ज्ञान मिले और भाव शुद्ध हो। दृश्य का भी हमारे भावों पर असर पड़ सकता है। पढ़ना भी है या देखना भी है, तो ध्यान से देखें या पढ़ें।

सुनना और देखना ये दो ज्ञान के बड़े अच्छे माध्यम हो सकते हैं। जीभ, नाक व स्पर्श का भी संयम हो। भोजन जीवन के लिए है। जीवन भोजन के लिए न हो। मुँह से न तो ज्यादा स्वाद लेने की ओर न ही

ज्यादा विवाद करने की प्रवृत्ति करें।

कई लोग तो भूख से मर सकते हैं, पर कई लोग ज्यादा खाकर खराब हो सकते हैं। जिह्वा के साथ वाणी का भी संयम हो। स्वाद और विवाद में संयम रखें। हमारे जीवन में इंद्रियों का संयम रखें, अच्छा उपयोग करें। दुरुपयोग से बचें तो हमारा जीवन अच्छा रह सकता है, हमारी आत्म-चेतना भी कल्याण की ओर आगे बढ़ सकती है।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीनों सूत्रों को विस्तार से समझाया। तीनों संकल्प स्वीकार करवाए। कोटा में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी पधारे थे। करीब ५० वर्ष का समय बीत चुका है। जीवन में शिक्षा आवश्यक है, पर शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार रहें तो विद्यार्थी का जीवन अच्छा रह सकता है।

कोटा में मुनि धर्मचंद जी पीयूष का विराजना हुआ था। उनका विशिष्ट अनशन भी हुआ था। मुनिश्री की स्मृति करता हूँ। कोटा की जनता में अच्छी भावना, अच्छी आध्यात्मिकता, अच्छे संस्कार आते रहें।

नगरीय विकास मंत्री शांतिलाल धारीवाल ने आचार्यश्री महाश्रमण जी से संगान किया।

महापुरुषों की कल्याणी वाणी से पथ प्रशस्त हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

करोंदी, ३० नवंबर, २०२१

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी डाबी से १६ किलोमीटर विहार करते हुए करोंदी गाँव में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय पधारे।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी सुनकर कल्याण और पाप को जानता है। कल्याण और पाप को जानने के बाद जो श्रेयस्कर हो, उसका आचरण करना चाहिए।

सुनना एक ज्ञान का माध्यम है। पढ़ने, सुनने और इंद्रियों के द्वारा भी ज्ञान होता है। परंतु सुनना, पढ़ना या देखना यानी श्रोतेरिय और चक्षुरिंद्रिय ज्ञान का सशक्त माध्यम होता है। साधु का जीवन तो धर्म के लिए समर्पित रहना ही चाहिए। गृहस्थ है, वे भी सुनकर के धर्म के आचरण को स्वीकार कर सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति का एक सोपान है—सुनना।

सुनने से ज्ञान, ज्ञान से विज्ञान, फिर आगे प्रत्याख्यान आदि का क्रम चलता है। महापुरुषों की कल्याणी वाणी कानों में पढ़ने से पथ प्रशस्त कर सकती है। यह रोहणिय चोर के प्रसंग से समझाया। संतों की संगति से पापात्माएँ अच्छे मार्ग पर चल सकती हैं, जीवन में अच्छा परिवर्तन हो सकता है।

गृहस्थ जीवन में सदाचार आए। आदमी हिंसा-चोरी, झूट से बचने का उपरत रहने का प्रयास करे। व्यसनों की आदतों से बचने का प्रयास करें। दुनिया में जो अच्छे



संत-ज्ञानी लोग हैं, वे जो रास्ता बताते हैं, उस कारण से धर्म का प्रभाव बढ़ सकता है। संत पुरुष स्वयं साधना करने वाले और दूसरों को सन्मार्ग बताने का प्रयास करते हैं। संत जो बात बताते हैं, उस पर जनता अधिक ध्यान देती है।

गृहस्थ सोचे कि मेरा हिंसा और परिग्रह केरें कम हो। परिग्रह के लिए आदमी हिंसा करता है। गरीबी हिंसा का कारण बन सकती है। दूसरों को तकलीफ हो ऐसा कारण न बने। निमित्त और उपादान कारण से हिंसा हो सकती है। निमित्त उपादान पोषण देने वाला बन सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया। गृहस्थ जीवन में भी धर्म की साधना एक सीमा तक हो सकती है।

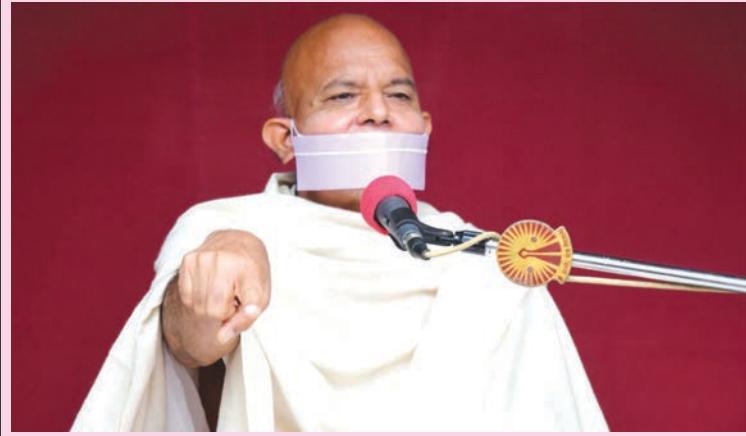
गृहस्थ वेश में भी वीतरागता आ सकती है, केवल भी प्राप्त हो सकता है। आदमी गार्हस्थ्य में त्याग-प्रत्याख्यान का

प्रयास जितना हो सके करे। गृहस्थ जीवन में कलह को मौका न मिले। घर-घर में स्वर्ग बन सकता है। घर नरक का स्थान न बने। यह एक प्रसंग से समझाया कि साधु जो संयम में रहा हुआ है, वो स्वर्ग से भी उच्च है। गुस्सा नरक का एक कारण बन सकता है। शांति स्वर्ग के समान है।

संस्कृत श्लोक में कहा गया है कि मोक्ष यही है। जो विकारों-अहंकार से मुक्त है। उसके इसी जीवन में मोक्ष है। कषायमुक्त अपने आप में एक मुक्ति है। हम जीवन में धर्म के मार्ग में चले तो व्यावहारिक रूप में स्वर्ग भी जीवन में और धर्म का आचरण न करे तो नरक भी जीवन में हो सकता है। हम सदाचार-सन्मार्ग पर चलने का प्रयास करें, यह काम्य है। प्रवचन के पश्चात इंदौर से विहार कर तपोमुनि कमल कुमार जी ने अपने सहवर्ती संतों के साथ आचार्यप्रवर के दर्शन किए।



शास्त्र सम्मत शिक्षा से बदल सकती है जीवन की दिशा एवं दशा : आचार्यश्री महाश्रमण



कोटा बाहर, १ दिसंबर, २०२१

जन कल्याण के लिए जनकल्याणी अहिंसा यात्रा में गतिमान आचार्य श्री महाश्रमण जी १५ किलोमीटर विहार कर शम्भुपुरा मोड़ पधारे। प्रवचन में आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाठ्य प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने चार शिक्षात्मक निर्देश दिए हैं। साधना की दृष्टि से ये बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। व्यवहार की दृष्टि से भी इनकी उपयोगिता है। पहला शिक्षा पद है कि बिना पूछे मत बोलो। बिना पूछे न बोलना कई संदर्भों में अलाभ से बचाने वाला हो सकता है।

दूसरा शिक्षा पद है—तुमसे कोई बात

पूछे तो ज्ञान मत बोलो। सही बात बताने का साहस नहीं है, तो मौन रहो। अपडितों के लिए तो मौन आभूषण है। मूर्खों के लिए तो मौन अच्छा है ही पर ज्ञान होने पर भी मौन रहो। हर जगह बोलना जरूरी नहीं है। दूसरों के बारे में गलत न बोलें, यह एक प्रसंग से समझाया कि एक-दूसरे के बारे में मृषा बात न करें।

तीसरी बात बताई है कि आदमी को कभी गुस्सा भी आ सकता है, गुस्से को अस्तित्वहीन बनाने का प्रयास करें। गुस्सा मन में आ जाए पर वाणी या भावों पर आने न दें। गुस्से को दीर्घ-श्वास से असफल करें। चौथी शिक्षा दी है कि प्रिय-अप्रिय को धारण करो।

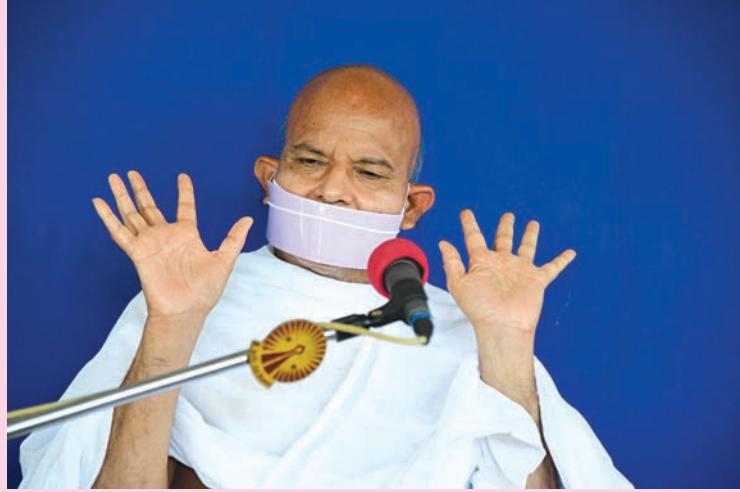
प्रियता-अप्रियता की स्थिति आ जाए तो उसे पी लो, बात को बाहर न आने दें। सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न करें। सत्य-असत्य हो सकता है। कोई निंदा भी करेतो गम खा जाओ। गम खाना, नम जाना अच्छा है। खुद की प्रशंसा करने का प्रयास न करें।

हर बात की प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। तत्काल-जल्दबाजी में टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। हर किसी को बिना पूछे सलाह नहीं देनी चाहिए नहीं तो फिर गलत हो सकता है, यह बयां और बंदर के प्रकरण से समझाया।

मौका देखकर सलाह देनी चाहिए। शास्त्रकार ने शिक्षाएँ दी हैं, हम इन्हें ग्रहण करें। एक-एक शिक्षा भी हमारे जीवन की दिशा को अच्छी बना सकती है। परिवर्तित कर सकती हैं और जीवन की दशा भी बदल सकती हैं।

गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी प्रवचन किया करते थे। उनके प्रवचन से कितनों का जीवन बदला होगा। कल्याणी वाणी सुनने से भी किसी को कल्याण का पथ प्राप्त हो सकता है। हम अपने जीवन में अच्छी शिक्षाओं को जितना संभव हो सके, आत्मसात करने का प्रयास करें। यह कल्याणकारी हो सकता है।

प्रवृत्ति करने के तीन साधन-शरीर, वाणी और मन : आचार्यश्री महाश्रमण



बिजौलिया, २८ नवंबर, २०२१

जैन दर्शन में पाँच ज्ञान बताए गए हैं, उनमें एक ज्ञान है, मनःपर्यव ज्ञान। मन की स्थिति को जान लेना यह अतीन्द्रिय ज्ञान होता है। दुनिया में ज्यादा पाप मन वाला प्राणी करता है। नरक में भी मन वाला प्राणी जा सकता है। बिना मन वाला पहले नरक तक जा सकता है। ज्यादा धर्म भी बिना मन वाला प्राणी नहीं कर सकता। मनुष्य जितनी साधना तो दूसरे जीव कर ही नहीं सकते। मन एक

समझ सकते हैं।

जैन दर्शन में पाँच ज्ञान बताए गए हैं, उनमें एक ज्ञान है, मनःपर्यव ज्ञान। मन की स्थिति को जान लेना यह अतीन्द्रिय ज्ञान होता है। दुनिया में ज्यादा पाप मन वाला प्राणी करता है। नरक में भी मन वाला प्राणी जा सकता है। बिना मन वाला पहले नरक तक जा सकता है। ज्यादा धर्म भी बिना मन वाला प्राणी नहीं कर सकता। मनुष्य जितनी साधना तो दूसरे जीव कर ही नहीं सकते। मन एक ऐसा तत्त्व है, जो हमें ऊँचा भी ले जा सकता है और अधोगति में भी ले जा सकता है।

मन सुमन हो तो वह ऊर्ध्वगति में

ले जाने वाला हो सकता है। हम अपने मन को पावन रखने का प्रयास करें। सबके कल्याण की बात सोचें। यह एक प्रसंग से समझाया। दूसरों का बुरा सोचने वाला खुद का बुरा कर लेता है। बुरा मत देखो, यह एक प्रसंग से समझाया। दूसरों का बुरा सोचने वाला खुद का बुरा कर लेता है। बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत कहो और बुरा मत सोचो। आज हम जिस परिसर में आए हैं, वह भगवान पार्श्व से जुड़ा है। भगवान पार्श्व पुरुषादानीय थे। हम भी वीतराग बनने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना पार्श्वनाथ क्षेत्र से लाभचंद जैन, नरेंद्र बगड़ा, पूर्व विधायक विवेक धाकड़, टाकुर सौभाग्य सिंह, बिजौलिया श्रीसंघ से यशवंत पुगलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। नंदिनी जैन ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जो सोता है वह खोता है : आचार्यश्री महाश्रमण



डाबी, २६ नवंबर, २०२१

मानवता के मसीहा, अखंड परिवाजक महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी भीलवाड़ा जिले की सीमा पार कर १८ किमी प्रलंब विहार कर बूँदी जिले के डाबी गाँव पधारे। जैन जगत के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में क्षेत्र का भी उपयोग होता है और समय भी अनिवार्य होता है। कोई भी कार्य करने के लिए स्थान चाहिए और समय भी चाहिए। समय एक ऐसी चीज है, जो फ्री में मिलता है। पर इस फ्री में मिलने वाले समय का हम उपयोग करें।

बीतता है। मूर्ख लोगों का समय प्रमाद में बीतता है। समय को फालतू जाया न करें।

समय कीमती चीज है। Time is money. हमें समय के संबंध में कंजूस बनना चाहिए। समय को सोच-सोचकर लगाएँ। अच्छे धार्मिक-आध्यात्मिक कार्यों में हमारा समय लगे। पंडित आदमी समय का मूल्यांकन करे। जीवन में महत्वपूर्ण अवसर मिले, उसे आदमी न खोए। यह एक प्रसंग से समझाया कि जो प्रमाद में रहता है, उसे देवता भी सहायता नहीं कर सकते। जो सोता है, वो खोता है। अवसर का उपयोग करने वाला मालामाल होता है।

जिसका जो कर्तव्य है, वह उसके प्रति जागरूक रहे। थोड़ी कठिनाई सहन कर भी साधु कर्तव्य का पालन करे। राजा के तीन कर्तव्य होते हैं—सज्जनों की रक्षा करें, दुर्जनों को अनुशासित करें और अपनी प्रजा का भरण-पोषण हो। जो व्यक्ति सरकार या प्रशासन में है, वो प्रजा को राजी नहीं करें।

उपयोग के तीन शब्द बन जाते हैं—सद्-उपयोग, अनुपयोग और दुरुपयोग। समय का सदुपयोग करें। दुनिया में बढ़िया आदमी वह है, जो समय का सदुपयोग करता है। समय को फालतू न गवाएँ। बुद्धिमान लोगों का समय काव्य-शास्त्र आदि अच्छे कार्य में है, वो प्रजा को राजी नहीं करें।

सेवा नहीं करे, उसका जन्म निरर्थक है, जैसे बकरी के गले के स्तन।

सेवा में नैतिकता का मूल्य सर्वश्रेष्ठ होता है। कर्तव्य का पालन नहीं करना। कर्तव्यच्युत हो जाता है। अधिकार प्राप्त हो गया और सेवा नहीं करें, तो उसके अधिकार में से अ को हटा देना चाहिए। आदमी समय का बढ़िया उपयोग करें। धार्मिकता भी जीवन में रहे। आध्यात्मिकता में भी समय लगाएँ और अच्छा जीवन जीने का प्रयास करें। कार्यक्रम में डाबी के संजय पोकरणा, दिंगंबर समाज से फूलवंद जैन, श्वेतांबर संघ से प्रकाश नागौरी ने अपनी भावनाएँ रखीं।

आज प्रातः विहार के अंतर्गत पूज्यप्रवर का स्थानकवासी साधु-साधिवयों से मिलना हुआ। मार्ग में पूज्यप्रवर गौशाला भी पधारे। राजस्थान सरकार के पूर्व वित्तमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष ने आचार्यप्रवर के दर्शन का आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

◆ अणुप्रत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप से साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।

— आचार्य श्री महाश्रमण



स्नेहम कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में स्नेहम कार्यशाला बेगमपेट स्थित देवनार स्कूल फोर ब्लाइंड स्कूल में आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। बहनों द्वारा मंगलाचरण संगान किया गया। मंडल अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने सभी का स्वागत किया। स्कूल में लगभग ५५० बच्चे रहते हैं। महिला मंडल की ओर से ब्रेल नोट्स लिखने के पॉच रिम पेपर्स, दरियाँ, ५० किलो दाल, बच्चों को चॉकलेट्स, बिस्किट, फल आदि दिए गए।

मुख्य अतिथि कॉरपोरेट चिरा सुवित्रा ने सभी को शुभकामनाएँ दी। विशेष अतिथि खुशबू अग्रवाल, स्कूल चेयरमैन ज्योति एवं युवा मोर्चा नेता नमन भंसाली ने महिला मंडल को शुभेच्छाएँ दी। सभी विशेष अतिथियों का मंडल की ओर से सम्मान किया गया। परामर्शक चंद्रा सुराणा ने विषय वक्तव्य दिया। संयोजिका पुष्टा बरड़िया, सायर दुग़ड़ का पूर्ण सहयोग रहा।

कार्यक्रम का संचालन पुष्टा बरड़िया ने किया। रीटा सुराणा ने बच्चों को प्रेक्षाभ्यास का प्रयोग करवाया। मंडल की ओर से संरक्षिका सुशीला संचेती, प्रेम पारख, रीटा सुराणा, शकुंतला बुच्चा, हर्षलता, शांता बैद, अल्पना, विनयश्री, अंजु गोलच्छा, वीनू नाहटा, रुबी आदि की उपस्थिति रही। मंडल की बहनों ने सामग्री और अर्थिक सहयोग दिया। मंत्री श्वेता सेठिया ने अभार ज्ञापन किया।

रूपांतरण कार्यशाला का आयोजन

साहूकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अभातेमम के तत्त्वावधान में तेमम, चेन्नई की आयोजना में अपने जीवन को खुशहाल बनाएँ---गैर-निरपेक्षता या बहु-दृष्टिकोणवाद का सिद्धांत---श्री रूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला का आयोजन साहूकारपेट तेरापंथ भवन में किया गया।

सच्चा न्याय नाटिका का मंचन

विजयनगर।

सभा भवन में विराजित साध्वी प्रमिला कुमारी जी की प्रेरणा से साध्वी आस्थाश्री से अथक परिश्रम से विजयनगर तेरापंथ महिला मंडल के अंतर्गत कन्या मंडल ने रोचक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। जिसका शीर्षक था—‘सच्चा न्याय’। कार्यक्रम का शुभारंभ निधि

चावत ने मंगलाचरण से किया। तेरापंथ सभा के मंत्री मंगल कोचर ने कन्याओं को बधाई दी। ज्ञानशाला संयोजिका अभिलाषा डांगी ने भी कन्या मंडल के प्रति भावनाएँ व्यक्त की।

महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने महिला मंडल की ओर से सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मंगलचंद डूंगरवाल ने अनेकांतवाद पर प्रकाश डाला। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान हुआ। महिला मंडल उपाध्यक्षा गुणवंती खाटेड ने अनेकांतवाद पर अपने विचार प्रस्तुत किए। महिला मंडल द्वारा मुख्य वक्ता का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंधवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया।

आओ चलें गाँव की ओर

मदुरै।

मुनि अर्हत कुमार जी की प्रेरणा से मदुरै तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में ‘आओ चलें गाँव की ओर’ के अंतर्गत स्पेशल स्कूल ‘स्पार्कर्स विद्यालय’ में बच्चों को गेम्स, बल्लोंस, कैंडल्स, मैग्नेटिक अल्फावेट्स, कॉइन बॉक्सेस आदि सामग्री उनको दी गई। बच्चों के साथ समय बिताया एवं अध्यक्षा नयना पारख ने महाप्राण ध्वनि के बारे में बताया।

अभातेयुप के कार्यकारिणी सदस्य नितेश कोठारी भी उपस्थित थे एवं उन्होंने महिला मंडल के ऐसे कार्य की सराहना की। मंत्री दीपिका फूलफगर ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

कार्यशाला की मुख्य वक्ता रेणु दुग़ड़ रही।

रूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला

तिरुपुर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित कार्यशाला रूपांतरण Through Jainism का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया। स्वागत सीमा सामसुखा ने किया। कार्यशाला की मुख्य वक्ता रेणु दुग़ड़ रही।

रूपांतरण एक्सप्रेस के प्रथम पड़ाव ‘श्री’ के बारे में रेणु ने बताया वास्तविक ‘श्री’ हमारे भीतर है, वह है हमारा ज्ञान, दर्शन, चारित्र। यह हमारी वास्तविक संपत्ति व वास्तविक आत्मिक सुख है, यह हमेशा साथ रहने वाला है।

तत्पश्चात अनेकांत को समझाते हुए बताया कि अगर हमने अनेकांत को समझ लिया तो हम स्वयं सुलझ जाएँगे, जब हम स्वयं सुलझ जाएँगे तब हमारा परिवार व समाज का बातावरण अपने आप खुशनुमा बन जाएगा। आभार ज्ञापन व संचालन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

अध्यात्म लक्ष्मी से संपन्न बनें

मदुरै।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में रूपांतरण एक्सप्रेस—श्री संपन्नोहं स्याम कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अध्यक्षा नयना पारख ने सभी का स्वागत किया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि हर व्यक्ति को अध्यात्मलक्ष्मी से संपन्न बनना चाहिए। लक्ष्मी दो प्रकार की होती है—भौतिक और आध्यात्मिक। भौतिक लक्ष्मी से सुख-सुविधा संसाधन प्राप्त किए जा सकते हैं, पर मोक्ष महल में प्रवेश करने के लिए अध्यात्म लक्ष्मी आवश्यक है। अध्यात्म लक्ष्मी को पाने के लिए हमें जीवन में चार-एल को अपनाना पड़ेगा।

(१) ‘लाइटिंग’ अर्थात् जीवन के प्रकाशमान बनाएँ। (२) ‘लर्निंग’ जीवन में हमेशा कुछ नया सीखते रहें, जहाँ से जो भी ज्ञान मिले उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। (३) ‘लाविंग’ जीवन में सबसे स्नेहपूर्ण और प्रेम भरा व्यवहार रखें, जिससे आपका जीवन मधुर बन सके। (४) लाफिंग’ हमेशा मुस्कराते रहें, हर परिस्थिति में चेहरे पर मुस्कुराहट बनाए रखें।

‘बने सहाय फैलाएँ उजियारा’ कार्यक्रम

हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में हैदराबाद कन्या मंडल ‘बने सहाय फैलाएँ उजियारा’ कार्यक्रम हेतु सनहीता गर्ल्स स्कूल एंड ओरफेनेज गए। वहाँ एक ‘Wall of Joy’ का चार्ट लगाया गया, जिसमें वहाँ के बच्चों ने प्रतिदिन के जरूरत का सामान लिखा और उसके अनुसार वहाँ सामान ले जाया गया।

हैदराबाद कन्या मंडल अनाथ आश्रम गए और वहाँ के बच्चों के साथ दो घंटों तक समय बिताया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई, सभी बच्चे भी साथ में नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। बच्चों की संख्या लगभग ६० थी और कन्या की उपस्थिति १५ थी। कन्याओं ने बच्चों को गेम्स खिलाया। वहाँ के बच्चों ने भी बहुत ही उत्साह के साथ अपनी कला का प्रदर्शन किया। विजेताओं को पुरस्कार देकर उनका उत्साह बढ़ाया। अंत में बच्चों के जरूरत का सामान उन्हें दिया गया। कन्या मंडल की कन्याओं ने भी इसमें अपनी पूर्ण सहभागिता दिखाई। कार्यक्रम में कन्या प्रभारी निशा पिंचा, सह-प्रभारी चंदन कोठारी, संयोजिका प्रार्थना, सह-संयोजिका कुंजल भी उपस्थित थे।

मेक योअर लाईफ हैप्पी

छापर।

मुनि पृथ्वीकुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार महिला मंडल के तत्त्वावधान में ‘मेक योअर लाईफ हैप्पी’ श्री रूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला का आयोजन भिक्षु साधना केंद्र में किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सरिता सुराणा ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए, अनेकांत पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि अनेकांतवाद स्यादवाद का कोण है आग्रह और दुराग्रह व्यावहारिक जिंदगी को दूषित बना देता है।

व्यक्ति अनेकांत को समझकर दुराग्रह से दूर होने का प्रयास करे। हर समय का अच्छा उपयोग हो, जिससे हमारा जीवन रोल मॉडल बन सके। रजनी भंसाली ने भी अनेकांत पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष मंजु दुधोड़िया ने किया। मुनिश्री द्वारा प्रदत्त मंगलपाठ से कार्यक्रम का समाप्त हुआ।

अनेकांतवाद कार्यशाला

राजाजीनगर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित ‘अनेकांतवाद कार्यशाला’ का आयोजन महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा तेरापंथ भवन राजाजीनगर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ की गई। महिला मंडल द्वारा सामूहिक रूप से प्रेरणा गीत का संगान किया गया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष उषा चौधरी ने स्वागत वक्तव्य दिया। मंत्री सीमा श्रीशीमाल ने महिला मंडल कार्यक्रम ‘स्नेहम प्रोजेक्ट’ की जानकारी दी।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजाजीनगर के वरिष्ठ श्रावक जुगराज श्रीशीमाल ने अनेकांतवाद विषय पर एक छोटी कहानी के माध्यम से समझाने का प्रयास किया। कार्यकारिणी सदस्य भावना पोरवाड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया। कन्या मंडल सहभारी सरिता हीरावत ने आभार ज्ञापन किया।

काव्यम् प्रतियोगिता का आयोजन

जीन्द।

अभातेमम द्वारा असाधारण साधीप्रमुखा कनकप्रभा जी के ५०वें मनोनयन दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर काव्यम् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जीन्द तेमम की ओर से कन्या मंडल की संयोजिका प्रेक्षा जैन तथा सह-संयोजिका रक्षिता जैन ने इसमें भाग लेकर सुंदर तथा रोचक कविता प्रस्तुत की।

जीन्द तेमम की अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल ने बताया कि अभातेमम धार्मिक तथा स



चारित्रात्माओं का आध्यात्मिक मिलन

रोहिणी, दिल्ली।

शासनश्री साध्वी रत्नश्री जी रोहिणी में विराजित थीं। उनके दर्शनार्थ एवं गुरुदर्शन के लिए पथारने वाली बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी एवं शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी आपसे आशीर्वाद एवं मंगलकामना ग्रहण करने के लिए रोहिणी पथारी।

तीनों श्रुपों की साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन को देखकर समग्र दिल्ली समाज भाव-विभोर हो रहा था। साध्वी रत्नश्री जी ने कहा कि आप लोगों ने देखा तेरापंथ धर्मसंघ में कितनी प्रेम, सौहार्द और वात्सल्य की धाराएँ प्रवाहित हैं। संघ का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे से मिलकर आनंदित एवं पुलकित हो जाते हैं। मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूँ कि ये साध्वियाँ आँगन में पथारी हैं।

साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि आचार्यप्रवर ने महती कृपा करके हम लोगों को दर्शनार्थ आदेश दिया है। साध्वी शशिरेखा

जी ने कहा कि हमारा तो सौभाग्य है ही पर हमारे से बढ़कर आपका सौभाग्य है कि आपको दर्शन देने के लिए गुरुदेव स्वयं आपके आँगन में पथारेंगे, घर बैठे गंगा आएंगी। साध्वी सुव्रता जी आदि साध्वियों ने सामूहिक संगान के द्वारा साध्वियों का स्वागत किया।

साध्वी मधुलता जी, साध्वी शीतलयशा जी, साध्वी कांतप्रभा जी आदि साध्वियों ने मधुर मिलन के प्रसंग पर सामूहिक गीत के द्वारा हर्षाभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली तेरापंथी सभा के अध्यक्ष जोधराज बैद, तेरापंथी सभा, दिल्ली के महामंत्री डालमचंद बैद, रोहिणी सभा सभाध्यक्ष मदनलाल जैन, रोहिणी सभा महामंत्री राजेश बैंगाणी, तेयुप उपाध्यक्ष संजीव जैन, ज्ञानशाला से रतनलाल जैन पुष्टा बैंगाणी, मुदित, प्रवीण सिंधी राजू राखेचा, सीमा जैन, दक्षिणी दिल्ली समाज आदि ने स्वागत वक्तव्य दिया। मंच का संचालन पराग जैन ने किया।

जीवन-विज्ञान दिवस का आयोजन

राजाराजे श्वरी नगर।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस जीवन-विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी श्री द्वारा महामंत्रोच्चार के पश्चात महिला मंडल द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम के संगान से मंगलाचरण किया गया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि राष्ट्रसंत अपुवत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का महान अवदान है—प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान। जन-जन की चेतना को जगाने के लिए यह श्रेष्ठ अभिक्रम हैं जीवन-विज्ञान यानी जीने की कला।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी दार्शनिक जगत में

के महान सूत्रधार थे। अन्यत्र ऐसा महान, सरल व्यक्तित्व मिलना दुर्लभ है। वे स्वयं एक आत्म-विजेता थे, जिन्होंने ध्यान में सार्थक दिशाएँ ढूँढ़ी। साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेतनाश्री जी ने श्रद्धा प्रणत विचार रखे एवं जीवन-विज्ञान गीत का संगान किया।

सभाध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली एवं पूर्व अध्यक्ष कंचन छाजेड़, छारसिंह सेठिया, नवीन आचार्यश्री महाप्रज्ञ जो की श्रद्धा संपूर्ण भावना से अभिवंदना की। इस अवसर पर दिनेश मरोठी, गौतम दक, पूर्व अध्यक्ष नरेश बांठिया, मंत्री विकास छाजेड़, हेमराज सेठिया, संयोजक विपुल पितलिया आदि

अनेक सदस्यगण उपस्थित थे। संचालन मंत्री विक्रम मेहर ने किया।

सोशल मीडिया फायदे और नुकसान

रायपुर।

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के संयुक्त तत्त्वावधान में कन्याओं का ‘सोशल मीडिया फायदे और नुकसान’ पर मंचन और मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि रायपुर के महापौर एजाज ढेबर थे।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि पढ़ने के साथ मनन नहीं होता है तो वह भारभूत बन जाती है। उसका ज्ञान केवल शास्त्रिक ज्ञान तक सीमित रह जाता है। मेधावी छात्रों में अध्यात्म विद्या का भी विकास होना चाहिए। सोशल मीडिया के दुरुपयोग से बचना चाहिए। मुनिश्री ने आगे कहा कि महापौर एजाज ढेबर अच्छे उदार सेवाभावी हैं। नगर में खूब नैतिकता, सद्भावना, नशामुक्ति का माहौल बना रहे।

महापौर ने कहा कि बच्चों का विकास, नगर का विकास है। मुनिश्री के दर्शन कर मैं अभिभूत हूँ। महिला मंडल अच्छा कार्य कर रही है। कार्यक्रम में मेधावी छात्रों का सम्मान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सेठिया, मंत्री नेहा जैन, टीपीएफ से रितु पोखरना, मंत्री विपुल जैन ने भी विचार रखे। संचालन प्रतिभा पोखरना एवं डिंपल फलोदिया ने किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्झन

जैन विधि - अमूल्य निधि



बूतन व्यवसाय प्रतिष्ठान

दिल्ली।

लाडनू निवासी, दिल्ली प्रवासी उम्मेद सिंह रमेश बैद के नूतन व्यवसाय प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुणेचा व संस्कारक हिम्मत राखेचा, हेमराज राखेचा, जतन श्यामसुखा ने मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। गांधीनगर क्षेत्र के संयोजक गौरव मणों ने तेयुप, दिल्ली की तरफ से बैद परिवार का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से बैद परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

बूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

पारसमल-राजूदेवी खटेड़ (लाडनू निवासी-दिल्ली प्रवासी) का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुणेचा व संस्कारक प्रकाश सुराणा ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। संस्कारक प्रकाश सुराणा ने तेयुप दिल्ली की तरफ से खटेड़ परिवार का आभार ज्ञापन किया। तेयुप की तरफ से खटेड़ परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

बूतन गृह प्रवेश

साउथ हावड़ा।

राकेश-ज्योति चोरडिया के नूतन गृह प्रवेश का पूजन जैन संस्कार विधि से तेयुप के सहयोग से आयोजित हुआ। अशोक कोठारी ने गृह प्रवेश सामूहिक गीत गाया। अभातेयुप संस्कारक संजय पारख एवं निर्वत्मान अध्यक्ष पवन कुमार बैंगाणी ने मंत्रोच्चार से कार्यक्रम करवाया।

तेयुप अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने मंगलभावना भेंट कर अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार संयोजक हिंतेंद्र बैद ने किया।

श्रोरुम का उद्घाटन

पूर्वांचल-कोलकाता।

राजगढ़ निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी सुशील-संगीता बोथरा के श्रोरुम का शुभ मुहूर्त अभातेयुप जैन संस्कारक मालचंद भंसाली द्वारा जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया गया।

कार्यक्रम में पूर्वांचल-कोलकाता के अध्यक्ष विकास सिंधी एवं जैन संस्कार विधि के संयोजक विनोद बरडिया की उपस्थिति रही।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

अभिनव-पूर्वी जैन की सुपुत्री व राकेश-विनिता जैन के सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से करवाकर मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। संस्कारक राजेश जैन ने विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप, जयपुर के निर्वत्मान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगाणी, मंत्री सुरेंद्र नाहटा, जैन संस्कार विधि के संयोजक विनीत सुराणा सहित अन्य गणमान्य महानुभावगणों की उपस्थिति रही।

बूतन गृह प्रवेश

इचलकरंजी।

राजगढ़ निवासी, इचलकरंजी प्रवासी प्रेमकुमार माणकचंद गीड़िया के नूतन गृह का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक विकास सुराणा, पंकज जोगड़ ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष मुकेश भंसाली, मंत्री रोहित भंसाली, उपाध्यक्ष प्रवीण कांकरिया, अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य संजय बैद मेहता, तेमरं अध्यक्षा जयश्री जोगड़ सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे।

बूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

सौरभ टांटिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक अरुण बैद, विक्रम दुग्ड़, आनंद बोथरा एवं वीरेंद्र सालेचा ने मंत्रोच्चार के साथ संपादित किया। तेयुप अध्यक्ष ललित बेगवानी ने मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष पंकज धीया ने किया। तेयुप की ओर से सौरभ टांटिया को मंगलभावना पत्रक भेंट दी। कार्यक्रम में सहमंत्री गौतम बरडिया की उपस्थिति रही। सौरभ टांटिया ने तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया।

बूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

गदग।

खिमराज दीपचंद देवराज भंसाली ने अपने नए प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार व



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान की मुद्रा



प्रश्न : आसन का उपयोग केवल ध्यान के लिए ही है या दूसरा भी? ध्यान नहीं करने वाले लोग भी नियमित रूप से योगासन करते हैं। कुछ लोग तो आसन को ही योग मानते हैं। योग की कक्षाओं में केवल आसन ही तो सिखाए जाते हैं। योग शब्द किसी पूरी परंपरा का वाचक है या केवल आसन-क्रियाओं का?

उत्तर : ध्यान के लिए तो आसन किए ही जाते हैं, उसके अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी योगासन किए जाते हैं। शरीर और मन की अस्वस्थता का प्रमुख कारण है—शरीर-तंत्र के पुर्जों का सही रूप में काम नहीं करना। आलस्य और अतिश्रम—ये दोनों स्थितियाँ ऐसी हैं, जिनमें शरीर-तंत्र अव्यवस्थित हो सकता है। इस अव्यवस्था को रोकने के लिए साधक को आसन-योग का प्रशिक्षण मिलता है। कई आसनों का प्रयोग इंद्रियों और मानसिक विकारों पर काबू पाने के लिए करवाया जाता है। प्रेक्षाध्यान की पद्धति में आसनों का एक निश्चित क्रम है। उपर्युक्त आसनों के अतिरिक्त बहुत प्रकार के आसन हैं, जिनके समुचित प्रयोग से ऊर्जा संतुलित होती है, शरीर में हल्कापन आता है, स्फूर्ति और दीप्ति बढ़ती है, अतिरिक्त चर्चा समाप्त होती है और स्नायविक दृढ़ता बढ़ती है।

आसन योग का एक अंग है। हठयोग का यह प्रमुख अंग है। किंतु समूचा योग इस एक क्रिया में अंतर्गत नहीं हो सकता। आचार्य हरिभद्र ने तो उन सब क्रियाओं को योग कहा है, जो साधक को बंधन से मुक्ति की ओर अग्रसर करती हैं। योग के आचार्यों ने चित्तवृत्ति के निरोध को योग कहा है। यद्यपि आज आसनों के लिए योग शब्द का प्रयोग प्रचलित हो गया है, पर वह योग की पूर्णता नहीं है। आसन, ध्यान, तप आदि विविध क्रियाओं का एक व्यवस्थित क्रम है, जिससे होकर योग के साधकों को गुजरना होता है।

जैन आगमों में योगासन के लिए स्थान शब्द का प्रयोग मिलता है। वहाँ स्थानयोग के तीन प्रकार बतलाए हैं—ऊर्ध्वस्थान, निषीदनस्थान और शयनस्थान। आगम का मूलभूत उद्देश्य है—स्थिर होना। इस दृष्टि से स्थान शब्द का चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है। यह स्थिति का सूचक है। खड़े-खड़े कायोत्सर्ग करना, ऊर्ध्वस्थान; बैठे-बैठे आसन करना, निषीदन स्थान; और लेटकर आसन करना, शयन-स्थान कहलाता है। प्रेक्षाध्यान का अभ्यासार्थी इन सभी सुखद आसनों को साधने का प्रयोग करता है।

प्रश्न : शरीर को साधने के लिए आसनों के प्रयोग की बात समझ में आती है पर उसका प्रभाव मन पर क्या और कैसे होता है?

उत्तर : आसनों का प्रभाव प्रमुख रूप से शरीर पर होता है। किंतु जब इनका अभ्यास दीर्घकालिक हो जाता है, तब ये हमारी अंतःसावी ग्रंथियों पर भी अपना प्रभाव छोड़ने लगते हैं। उदाहरण के लिए सर्वांगासन कंठमणि (थायराइड ग्रंथि) को प्रभावित करता है। शशांकासन और पश्चिमोत्तानासन का प्रभाव उपवृक्तग्रंथि (एड्रिनल) पर होता है। इसी प्रकार कुछ अन्य आसनों से पिच्छूटरी, पीनियल आदि ग्रंथियाँ सक्रिय होती हैं, उनके साथ बदलते हैं और उनसे चाहे-अनन्य भी मन पर प्रभाव पड़ता है। वैसे शरीर के किसी भी हिस्से में परिवर्तन होता है, वह स्थूल या सूक्ष्म रूप में समूचे शरीर-तंत्र को प्रभावित करता है। शरीर और मन परस्पर जुड़े हुए हैं। शारीरिक बीमारी मन पर भी अपना असर छोड़ती है, इसी प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य भी मन की स्वस्थता में नियमित बनता है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इस तथ्य को सत्यांश माना जाए तो भी यह बात प्रमाणित हो जाती है कि आसनों के नियमित प्रयोग से शरीर और मन दोनों में रूपांतरण घटित हो सकता है।

प्रश्न : आसन का संबंध केवल बैठने या खड़े रहने से ही है या इसमें शरीर की अवस्थिति पर समग्रता से विचार किया गया है?

उत्तर : एकांगी विचार कभी पूर्ण नहीं हो सकता। इसलिए आसन के साथ भी कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न जुड़े हुए हैं, जैसे—पृष्ठरञ्जु (रीढ़ की हड्डी) कैसे रहे? शरीर सीधा तना हुआ रहे या झुका हुआ? आँखें खुली हों या बंद? हाथ कहाँ रहे? आदि। पृष्ठरञ्जु हमारा केंद्रीय नाड़ी संस्थान है। उसका शारीरिक परिवर्तन और मानसिक क्रियाओं के साथ गहरा संबंध है। प्राणऊर्जा की ऊर्ध्वायात्रा का भी वह एक मार्ग है। ध्यान की स्थिति में जाने से पूर्व ज्ञान-केंद्र से शक्ति-केंद्र तक प्राणधारा को पृष्ठरञ्जु के द्वारा ही प्रवाहित किया जाता है। संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि पृष्ठरञ्जु की स्वस्थता पूरे शरीर की स्वस्थता है और इसके आधार पर ध्यान-साधना के विकास की संभावना की जा सकती है। ध्यानकाल में पृष्ठरञ्जु बिलकुल सीधी रहे, यह पहली शर्त है। शरीर थोड़ा-सा आगे की ओर झुका रहे। शरीर का पीछे की ओर झुकना ठीक नहीं है। इसलिए प्रयत्नपूर्वक रीढ़ की हड्डी को सीधा रखकर उससे ऊपर का भाग आगे की ओर झुका हुआ होना चाहिए।

आँखों की तीन स्थितियाँ हैं—मुंदी हुई, खुली हुई और अर्ध-निर्मीलित। खुली हुई आँखों में बाहरी विधियों की अधिक संभावना रहती है। मुंदी हुई आँखों में विकल्पों और नींद की संभावना रहती है। अर्ध-निर्मीलित आँखों में इन दोनों संभावनाओं से बचाव है। इस दृष्टि से अर्ध-निर्मीलित स्थिति को सबसे अच्छा माना गया है। अर्हत की ध्यान-मुद्रा में भी आँखों की यही स्थिति निर्दर्शित की गई है।

आखिरी बात है हाथ कहाँ रहे? इन प्रश्न पर दो दृष्टियों से विचार किया गया है। खड़े-खड़े ध्यान करने के लिए प्रलंबितभुज—हाथ सीधे रखने का उल्लेख मिलता है। बैठकर ध्यान करना हो तो हाथ नाभि से कुछ नीचे गोद पर पेढ़ से सटे हुए हों, बाँहें हाथ पर दाँहें हाथ की अवस्थिति हो। यह एक प्रकार की ध्यान-मुद्रा है। अभ्यास पुष्ट होने पर अन्य किसी भी मुद्रा में बैठकर ध्यान किया जा सकता है। बैठकर ध्यान करने से कुछ अवरोध आ सकता है। फिर भी अभ्यासकाल में बैठे-बैठे ध्यान का प्रयोग करवाया जाता है। यह मध्यम स्थिति है। अभ्यासार्थी साधकों के लिए यही अधिक उपयुक्त है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(३६)

देख उदय अभिताभ अरुण का विकसित सब मन के जलजात। पाखी करते मधुरिम कलरव उजला-उजला आज प्रभात।।

महक रही मदमस्त हवाएँ खिला हुआ मानो मधुमास थिरक रही संगीत-लहरियाँ फैली चारों ओर सुवास दिग्दिगंत में गूँज रही है कथा कौमुदी-सी अवदात।।

खुशियाँ उतर रही नयनों में घर-घर में छाया उल्लास हर पल रस भीगा-सा लगता कण-कण में अभिनव उच्छ्वास तुम आए जब इस धरती पर शांत हो गए झंझावात।।

शब्दों की सीमा है निश्चित विस्तृत भावों का आकाश सतरंगी सपने समुदित हों हुए निषावर तुम पर खास नए सृजन के संदर्भों में शिल्प तुम्हारा है विख्यात।।

संयम ही जीवन है तुमने दिया विश्व को शाश्वत घोष हर उलझन का समाधान कर देता है सात्त्विक परितोष मानस का संताप मिटाने करते करुणा की बरसात।।

स्वन्ध और संकल्प तुम्हारा सुंदर हो जग की तस्वीर जीवन-मूल्यों को अपनाकर बदले नर अपनी तकदीर दीप जले पौरुष का ऐसा नूतन युग की हो शुरुआत।।

(४०)

है वही सार्थक सुबह जो सत्य का सूरज उगाए दीप्ति संयम की बढ़ा जो जिंदगी रोशन बनाए।।

मन-समंदर में उफनती चपल लहरों को दुलारे प्रबल झंझावात में भयभीत होकर जो न हारे प्रखर पौरुष से शिशिर में भी दिखा दे जो बहारें उस अमर तारुण्य के होते सभी अद्भुत नजारे परम पावन आज का दिन उस तरुणिमा को बधाएँ।।

द्वार पर जिसके सदा दस्तक सफलता दे रही है शांति की स्रोतस्विनी अनुगामिनी होकर बही है धूप में भी छाँव शीतल गगनपथ से उतर आती बिना पूछे ही जिसे सब अनकही मन ने कही है उखड़ते विश्वास में आश्वास की आभा जगाएँ।।

जो निराशा से रहा अनजान बन पहचान जग की प्रगति बनती संगिनी खुद मंजिलों पे उठे पग की काल के आलेख पर अंकित वही मतिमान होता जो नहीं परवाह करता एक क्षण भी विषम मग की चिरयुवा उस युगपुरुष को अर्ध पूरा युग चढ़ाए।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(३२) जाते: कुलस्य रूपस्य, न बलस्य श्रुतस्य च।
नैश्वर्यस्य न लाभस्य, न मदं तपसः सृजेत्।।

जाति, कुल, रूप, बल, श्रुत, ऐश्वर्य, लाभ और तप का मद न करें।

(३३) न तुच्छान् भावयेज्जीवान्, न तुच्छं भावयेन्निजम्।
सर्वभूतात्मभूतो हि, स्यादहिंसापरायणः।।

दूसरों को तुच्छ न समझें और अपने को भी तुच्छ न समझें। जो सब जीवों को आत्मभूत—अपने तुल्य समझता है, वह अहिंसा-परायण है।

उपरोक्त श्लोकों में अहिंसा का समग्र रूप प्रतिपादित हुआ है। जीवघात ही हिंसा नहीं है, दूसरों पर अनुशासन करना, धोखा देना, अपने अधीन रखना, दुःख देना, दास बनाना, आदि प्रवृत्तियाँ भी हिंसा हैं। जो अहिंसक होता है, वह ऐसा नहीं कर सकता। अहिंसा सभी व्रतों का सार है। कहा गया है कि अहिंसा ही व्रत है और दूसरे सारे व्रत उसी के पोषक हैं। जो अहिंसा का सही अर्थ में पालन करता है, वह सत्य, ब्रह्मचर्य आदि सभी व्रतों का पालन करता है।

डरना हिंसा है तो डरना भी हिंसा है। अहिंसा डरना नहीं सिखाती। वह व्यक्ति में अभय की शक्ति जगाती है। वास्तव में वही व्यक्ति अभय हो सकता है, जो अहिंसक है।

अहिंसा की प्राप्ति के लिए हिंसा के कारणों का विसर्जन भी अपेक्षित है। हिंसा के हेतु हैं—विरोध, भय, दूसरों के अधिकारों को कुचलना, अभिमान, दूसरों को हीन मानना और स्वयं को भी हीन मानना। वैर से वैर बढ़ता है, प्रतिशोध की भावना प्रबल होती है। इसलिए अहिंसक सबके साथ मैत्री का संकल्प करता है। उसका धोष है—मेरी सबके साथ मैत्री है, किसी के साथ शत्रु-भाव नहीं है।

भय से भी हिंसा का विस्तार होता है। भयभीत व्यक्ति प्रतिक्षण आशंकाओं से धिरा रहता है। अर्थ-नाश का भय, मृत्यु का भय, अपयश का भय, रोग का भय आदि भयों से उसका चिंतन हिंसोन्मुख रहता है। भयभीत व्यक्ति हजारों बार मरता है। जो व्यक्ति अभय है, उसे ये भय नहीं सताते और न वह अपने जीवन में अनेक बार मरता है। इसलिए भगवान् ने कहा है—अहिंसक न स्वयं डरे और न दूसरों को डराए। डरना और डरना दोनों ही हिंसा है।

दूसरों के अधिकारों का अपहरण करने से उनमें प्रतिशोध का भाव बढ़ता है। स्वयं में भय जगता है, प्रतिकार के उपायों से ध्यान आर्त बनता है, अतः किसी के अधिकारों को मत कुचलो।

अभिमान हिंसा है। दूसरों को हीन और अपने को ऊँचा मानना वह उसका लक्षण है। यह असमानता की वृत्ति व्यक्ति के मन में हिंसा का ज्वार पैदा करती है और उसका प्रतिफल अनेक कटुरूपों में फलित होता है। इसे आज कौन नहीं जानता। अहिंसा की साधना का अर्थ है—सदा विनम्र रहना और सबको अपने जैसा मानना। भगवान महावीर ने कहा है—‘नो हीणे नो अइरिते’ अपने-आपको न हीन समझो और न ऊँचा समझो। यह समता का मंत्र है और यह दूसरों के यथार्थ अस्तित्व का स्वीकरण है। दूसरों को तुच्छ मानना हिंसा है तो अपने आपको भी तुच्छ मानना हिंसा है। इससे आत्मा का शौर्य विलुप्त हो जाता है। व्यक्ति में घबराहट पैदा हो जाती है। वह अकाल में ही काल-कवलित हो जाता है। हीन वृत्ति वाला मनुष्य अपना, समाज, देश और राष्ट्र का भला नहीं कर सकता। अध्यात्म-क्षेत्र में प्रवेश करने से वह वंचित रह जाता है। हीन मनोवृत्ति वाले का मन सदा हीन भावना से धिरा रहता है। वह अपने ही हीन संकल्पों से हीनता की ओर बढ़ता रहता है। ‘मैं दरिद्र हूँ, मैं अस्वस्थ हूँ, मैं अशक्त हूँ, मैं अयोग्य हूँ’—ये संकल्प व्यक्ति को वैसा ही बना देते हैं। आज के चिकित्सक यह मानते हैं कि मनुष्य के शरीर में कुछ ऐसी ग्रंथियाँ हैं, जिनसे वह अपने को हीन मानने लगता है। वे चिकित्सा कर उसे हीन-भावना से मुक्त कर देते हैं। लेकिन मनोवैज्ञानिक और अध्यात्म-द्रष्टाओं की विचारधारा में इसकी सफल चिकित्सा है—हीन भावनाओं के स्थान पर उच्च संकल्पों को स्थान देना। मानसिक संकल्प के द्वारा अनेक रोगियों को आज रोग-मुक्त किया जाता है। तब यह हीन-भावना का मानसिक रोग संकल्पों से दूर क्यों नहीं किया जा सकता? मनुष्य सदा पवित्र संकल्पों को दोहराए और कुछ क्षण उनका चिंतन करे तो उस पर इसका जादू का-सा असर होता है, हीन भावनाएँ स्वतः ही नष्ट हो जाती हैं। संकल्प यों हो सकते हैं—

— मैं स्वस्थ हूँ। — मैं ऐश्वर्यशाली हूँ। — मैं शक्ति-संपन्न हूँ। — मैं योग्य हूँ। — मैं शुद्ध, बुद्ध और परमात्मरूप हूँ।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल ‘लाडनूं’ □

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-१३ : किस कल्प में कितने चारित्र हैं?

उत्तर : कल्प का अर्थ है—आचार-विधि। उसके पाँच प्रकार हैं—

- (१) स्थितिकल्प (२) अस्थितिकल्प (३) जिनकल्प
- (४) स्थविरकल्प (५) कल्पातीत

स्थितिकल्प मुनियों में पाँच चारित्र होते हैं।

अस्थितिकल्प व कल्पातीत में तीन—सामायिक, सूक्ष्म संपराय व यथाख्यात होते हैं।

जिनकल्प व स्थविरकल्प में प्रथम तीन चारित्र पाते हैं।

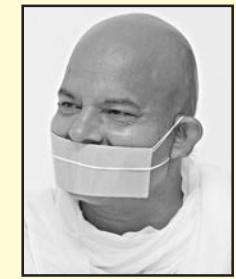
(क्रमशः)

उपसना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य आर्यरक्षित



(क्रमशः) मुनि रक्षित ने शीश झुकाकर अत्यंत विनीत भाव से आर्य भद्रगुप्त के मार्गदर्शन को स्वीकार किया। समाधिपूर्ण अवस्था में आर्य भद्रगुप्त के स्वर्गगमन के पश्चात् मुनि रक्षित ने वज्रस्वामी के पास न जाकर रात्रि में सोने की व्यवस्था उन्होंने अपनी अलग की। आर्य वज्रस्वामी ने ढलती रात में स्वज्ञ देखा—दूध से भरा कटोरा नवागंतुक पथिक आकर पी गया है पर कुछ पेय उसमें अवशेष रह गया है। प्रातः होते ही स्वज्ञ की बात वज्रस्वामी ने अपने शिष्यों से कही। वार्तालाप का यह प्रसंग पूर्ण भी न हो पाया था तभी अपरिचित अतिथि ने आकर वज्रस्वामी को बंदन किया। आर्य वज्रस्वामी ने पूछा—‘तुम कहाँ से आ रहे हो?’ मुनि रक्षित बोले—‘मैं आचार्य तोषलिपुत्र के पास से आ रहा हूँ।’ दूरदर्शी, सूक्ष्मचिंतक आर्य वज्रस्वामी ने कहा—‘तुम आर्यरक्षित हो? अवशिष्ट पूर्वों का ज्ञान करने के लिए मेरे पास आए हो? तुम्हारे उपकरण, पात्र, कहाँ हैं? उनको यहाँ ले आओ। यहाँ आहार-पानी की व्यवस्था कर अध्ययन-कार्य को प्रारंभ करो। पृथक् रहने से पूर्वों का अध्ययन कैसे कर पाओगे?’ मुनि रक्षित ने आर्य भद्रगुप्त द्वारा प्रदत्त मार्ग-दर्शन को कह सुनाया और अपनी पृथक् रहने की व्यवस्था भी बता दी। वज्रस्वामी ने भी ज्ञानोपयोग से समग्र स्थिति को जाना और आर्य भद्रगुप्त के निर्देशानुसार उनके पृथक् रहने की व्यवस्था को स्वीकार कर लिया।

दृष्टिवाद का पाठ विविध भंगों, पर्यायों एवं गंभीर शब्दों के प्रयोग से अत्यंत दुर्गम था। आर्यरक्षित ने स्वल्प समय में ही इस ग्रंथ के चौबीस यव पढ़ लिए। उनकी अध्ययनशीलता और क्षमता अद्भुत थी।

इधर दशपुर में रुद्रसोमा को पुत्र की स्मृति बाधित करने लगी। उसने सोचा, घर में दीपक की तरह प्रकाश करने वाला पुत्र चला गया। इससे सारा वातावरण अंधकारमय हो गया है। सोमदेव से परामर्श कर रुद्रसोमा ने कनिष्ठ पुत्र फल्लुरक्षित से कहा—‘पुत्र! मेरा संदेश लेकर ज्येष्ठ भ्राता के पास जाओ। उनसे कहना—“भ्रात! आपने संसार का मोह त्याग दिया है, पर माता-पिता का आपके प्रति मोह है। जननी रात-दिन आपको याद कर रही है। उसने आपके लिए संदेश भेजा है और तीर्थीकर महावीर ने भी मातृ-भक्ति को प्रधान माना था। उन्होंने गर्भावास में ही माता-पिता के रहते दीक्षा न लेने की प्रतिज्ञा कर माता के प्रति अपूर्व भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया। संतश्रेष्ठ! आपका घर से अनुबंध नहीं है पर माँ के द्वारा किए गए उपकार का स्मरण करते हुए आप एक बार अवश्य दशपुर पधारें। पिता के प्रति कृतज्ञ भाव प्रकट करें और माता का आशीर्वाद लें।’

फल्लुरक्षित माँ का आदेश प्राप्त कर वहाँ से चले। आर्यरक्षित के पास पहुँचे। माँ की भावना को उनके पास रखते हुए बोले—मुने! माँ आपके वियोग में दुःखी है। आपके दर्शनों के लिए लालायित हैं। सोते-जागते, उठते-बैठते आपके नाम का स्मरण कर रही है। उसने आपको बुलाया है। आप घर पर चलें और जननी की भावना को पूर्ण करें। आपके दर्शन से पूज्या माँ को, पिताजी को और परिवार वालों को असीम खुशी होगी। आपका उपदेश सुनकर वे भी इस पथ का अनुसरण कर सकते हैं। मुनि बनने के लिए एक भी व्यक्ति तैयार हुआ तो यह भारी उपकार का काम होगा।

बंधु की बात सुनकर आर्यरक्षित शांत और धीमे स्वर में बोले—फल्लुरक्षित! मोह हीं बंधन का कारण है। बंधन हीं दुःख है। बंधन-मुक्त होने के लिए अध्यात्मपथ का अनुसरण करना आवश्यक है। तुम्हारा मेरे प्रति आंतरिक मोह है तो मेरे पथ का अनुसरण करो। माता-पिता के दीक्षित होने की बात कहते हो तो पहले तुम ही मुनि बन जाओ।

आर्यरक्षित के उपदेश से फल्लुरक्षित दीक्षित हो गए। मुनिचर्या के नियमों का सजगता से पालन करते। जब भी दोनों बंधु एकांत में मिलते, मुनि फल्लुरक्षित जननी को दर्शन देने की बात आर्यरक्षित को याद करा देते थे। बंधु द्वारा बार-बार माँ की प्रार्थना सुनने से आर्यरक्षित के विचारों में मोड़ आया। चिंतन की धारा बदली। दशपुर जाने की भावना बन गई।

(क्रमशः)



मंगलभावना समारोह के आयोजन

मैसूर

‘मंगलभावना एवं कृतज्ञता’ समारोह में साध्वी डॉ मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि गुरु कृपा और शक्ति से चातुर्मास में धर्म गंगा बही, संपूर्ण श्रावक परिवार ने उत्साह के साथ अभिस्नान किया। समय बीत गया, पर महत्वपूर्ण बात है इस आध्यात्मिक प्रवास में से आपने जीवन सूत्र रूप में जिन हीरों का संचय किया है उसकी उपयोगिता कायम रखें।

साध्वीश्री जी ने कहा कि मैसूर की सभी सभा-संस्थाओं के पावस की सफलता में शक्ति का संयोजन किया। मैसूर श्रावक परिवार का जो मनोहर सौहार्द भाव है वह सदैव बढ़ता रहे। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना में संपूर्ण श्रावक परिवार उदितोदित रहा।

मुख्य अतिथि के रूप में सीपीआरएल डायनोस्टिक सेंटर के डॉ मदनलाल जैन उपस्थित रहे। ज्ञानशाला के प्रशिक्षिकाओं ने रॉबॉट एक्ट कार्यक्रम की मनमोहक प्रस्तुति दी। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी डॉ राजुलप्रभा जी, साध्वी डॉ वैतन्यप्रभा जी, साध्वी डॉ शैयप्रभा जी ने मैसूर पुराण कार्यक्रम के श्रावक परिवार गुणानुवाद किया। तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष सागरमल कोठारी, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष भेस्तलाल पितलिया सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपनी मंगलभावना व्यक्त की। भिक्षु भजन मंडली, सरगम एवं महिला मंडल ने गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। बाल संगायक मनन देरासरिया, सारिका भंडारी, विजयलक्ष्मी आच्छा, अंकिता नंगावत ने गीत का संगान किया।

इस अवसर पर चातुर्मासिक झलक के रूप में डॉक्यूमेंटरी का अवलोकन करवाया गया, जिसका संयोजन नम्रता नौलखा ने किया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के सदस्य महावीर देरासरिया ने किया। संपूर्ण परिषद ने आभार जताया।

पर्वत पाटिया

मुनि सुव्रतकुमार जी स्वामी आदि का पावस प्रवास संपन्न होने पर मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर आसपास के सभी क्षेत्रों के श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। मंगलभावना समारोह में महिला मंडल द्वारा गीतिका एवं ज्ञान कोठारी, सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारख, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, कन्या मंडल संयोजिका मुस्कान सिंध्वी, स्नेहा छाजेड़, रंजित धिया, महासभा से अनिल चंडलिया सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने मंगलभावना व्यक्त की।

मुनिश्री ने कहा कि पर्वत पाटिया का यह दो महीनों का प्रवास बहुत ही साताकारी रहा। यहाँ का श्रावक समाज विनीत और श्रद्धालु है। साधु-संतों का तो आना भी मंगल है और जाना भी मंगल है। श्रावक समाज में आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ चलती रहें। कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप के सीपीएस के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी ने किया।

जीन्द

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महापंच के माध्यम से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंगलाचरण रक्षिता जैन ने सुमधुर गीत से किया। साध्वी कुंथुश्री जी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा—भगवान महावीर की वाणी है, साधुओं की विहार चर्चा प्रशस्त होती है संत चरण गंगा की धारा, संत विचरण करते ही अच्छे लगते हैं। आज का दिन आत्मालोकन का दिन हैं चातुर्मास में क्या खोया, क्या पाया कितना विकास किया, चिंतन करें, कषायों का शमन करें।

साध्वी कंचनरेखा जी, साध्वी सुमंगलाश्री जी, साध्वी सुलभ्यशा जी का पूर्ण सहयोग रहा। तेरापंथ सभा अध्यक्ष खंजाची लाल जैन, मंत्री नारायण सिंह रोहिल्या, महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल, तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल, प्रेक्षा जैन, मीना जैन सहित अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने मंगलभावना प्रकट करते हुए चातुर्मास को सफलतम बताया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के संरक्षक राजेश जैन ने किया। इस

अवसर पर डॉ मीनाक्षी जैन, डॉ ममता जैन, डॉ गुरुदेव तथा वेदप्रकाश सिंगला को सभा द्वारा सम्मानित किया गया। अंत में साध्वीश्री जी ने समस्त श्रावक समाज से खमतखामण किया।

सूरत

साध्वी लब्धिश्री जी के चातुर्मास परिसंपन्नता पर मंगलभावना समारोह दो चरण में आयोजित हुआ। साध्वी के चातुर्मासिक प्रवास में धर्म प्रभावना का अच्छा कार्य हुआ। इस प्रवास में साध्वीश्री जी ने ज्ञान की गंगा बहाई, श्रावक समाज ने बहुत अच्छा लाभ लिया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि गुरुईंगित से हम सूरत चातुर्मास हेतु आए थे, यहाँ के श्रावक समाज ने बहुत लाभ लिया है, आप सबके सामने अक्षय तृतीया का पावन प्रवास है, ज्यादा से ज्यादा श्रावक-श्राविकाएँ वर्षीतप का संकल्प कर गुरु के श्रीचरणों में आध्यात्मिक भेट करें। साध्वी हेमयशा जी, साध्वी आराधनाश्री जी, साध्वी जिज्ञासाप्रभा जी, साध्वी आलोकप्रभा जी ने अपने भाव प्रस्तुत किए।

साध्वीश्री जी के इस सफलतम चातुर्मास की परिसंपन्नता पर सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी, श्रावक समाज सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। इसी क्रम में सभा के मैनेजिंग ट्रस्टी बालचंद बेताला, सभाध्यक्ष हरीश कावड़िया, अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा, महामंत्री नानालाल राठोड़, अभातेम महामंत्री मधु देरासरिया, महिला मंडल अध्यक्ष राखी बैद, टीपीएफ अध्यक्ष भारती छाजेड़, तेयुप पूर्व अध्यक्ष मुकेश राठोड़, अध्यक्ष गौतम बाफना, मंत्री अभिनंदन गादिया आदि कई पदाधिकारियों ने अपने भाव व्यक्त कर कृतज्ञता ज्ञापित की। मंच का संचालन सभा के मंत्री नरपत कोचर ने किया।

डी०वी० कॉलोनी, सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी का चातुर्मास बहुत ही प्रभावशाली रहा। मंगलभावना में अनेक भाई-बहनों ने अपनी भावना व्यक्त की। डी०वी० कॉलोनी की बहनों मैना देवी गीड़िया, चाँद बैद, भारती भूतोड़िया, ज्योति भूतोड़िया के मंगल स्वर से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत हुई। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा एवं उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद द्वारा साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावना एवं व्यक्त की गई।

महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीड़िया, वरिष्ठ श्रावक करणी सिंह बरड़िया, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, टीपीएफ से ऋषभ दुग्ध, अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक मेड़तवाल ने अपने भाव व्यक्त किए। मंजु सुराणा ने गीतिका प्रस्तुत की। संपत गोलछा, कन्या मंडल की बहनों द्वारा तथा चंडलिया परिवार की बहनों द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई।

ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका अंजु बैद एवं संगीता गोलछा ने अपने भाव व्यक्त किए तथा ज्ञानशाला की बहनों ने गीत के द्वारा विदाई दी। जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी ने साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद एवं उनकी टीम को सम्मानित किया गया।

साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी मार्दवयशा जी ने अपने भाव व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने समाज व सभी संस्थाओं के प्रति प्रमोद भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीपत बैद ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

चलान्दा

मुनि सुव्रतकुमार जी स्वामी, मुनि मंगलप्रकाश जी स्वामी, मुनि शुभम कुमार जी स्वामी का मंगल विहार नेचर वेली सारोती से अंतरौली की ओर हुआ। मंगल विहार में दिंगंबर संप्रदाय के श्रवण मुनि श्री १०८ विश्वविजय सागर जी महाराज के साथ आध्यात्मिक मिलन के साथ कुछ मिनिट धर्म वार्तालाप हुआ। इस आध्यात्मिक मिलन को अनेक श्रावकों ने निहारा।

मुनि सुव्रत कुमार जी स्वामी की विहार सेवा में तकरीबन २५ से ३० श्रावक उपस्थित थे।

एकाहिनक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

(७८) चित्रक्रिया प्रकृत्याद्याः, कर्तारः प्रचुरा भुवि।

मानवीयचरित्रस्य, चित्रणमतिरुद्धर्म्।

इस धर्मी पर प्रकृति आदि का चित्रण करने वाले तो बहुत हैं, किंतु मानवीय चरित्र का चित्रण अति दुर्लभ है।

(७९) ज्ञातं मया च संपठ्य, तेरापंथप्रबोधकम्।

भवति कं रहस्यं यत्, पारावारस्य गर्वे॥।

तेरापंथ-प्रबोध को पढ़कर मैंने जाना कि गागर में सागर का क्या रहस्य है?

(८०) जैनदर्शनसंस्कारतत्त्वादि विषयस्य च।

त्वया श्रावकसंबोधे, सुष्ठु विवेचनं कृतम्।

आपने श्रावक-संबोध में जैन दर्शन, संस्कार, तत्त्व आदि विषय का सुंदर विवेचन किया।

(८१) साहित्यस्यैव नासीस्त्वं, साहित्याकारसर्जकः।

अघटयः कियन्तो ज्ञान्, किं तव विषये ब्रुवे॥।

आप साहित्य ही नहीं, साहित्यकारों के भी सृजक थे। आपने कितनों को विद्वान् बनाया, गुरुदेव! मैं आपके विषय में क्या कहूँ।

ऐतिहासिक-वर्णन

(८२) भवता दीक्षिताः पञ्चाशतदिकं शतद्वयम्।

आत्मोद्धाराय प्रायश्च, धर्मपथे सुसाधवः॥।

धर्मपथ पर, आत्मोद्धार हेतु लगभग २५० आयु आप द्वारा दीक्षित हुए।

(८३) सुसाध्यः षट्शती प्रायः, संयमे दीक्षितास्त्वया।

वर्धन्तां सकले क्षेत्र



ज्ञानशाला के विविध आयोजन

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव एवं मेधावी छात्र सम्मान बालांगीर, ओडिशा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में उड़ीसा स्तरीय मंगलभावना समारोह, उड़ीसा स्तरीय ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव एवं मेधावी छात्र सम्मान समारोह बालांगीर तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा अध्यक्ष मुकेश कुमार जैन की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि के रूप में अनंग उदय सिंह देव, पूर्व मंत्री ओडिशा सरकार सम्मानित अतिथि के रूप में अर्केश नारायण सिंह देव नेता बीजेडी बालांगीर सभा अध्यक्ष पृथ्वीराज जैन, केसिंग सभा अध्यक्ष मंगतराम जैन, बालांगीर टीपीएफ के अध्यक्ष मनोज कुमार जैन एवं ओडिशा ज्ञानखंड ज्ञानशाला प्रभारी बीरेंद्र जैन की उपस्थिति रही।

मुनि जिनेश कुमार जी के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का आगाज हुआ। ज्ञानशाला ज्ञानार्थी बच्चों ने प्रस्तुतियाँ दी। मुख्य अतिथि अनंग उदय सिंह देव, सम्मानित अतिथि अर्केश नारायण सिंह देव

ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ओडिशा प्रांत के मेधावी छात्रों को टीपीएफ की ओर से सम्मानित किया गया।

मुनि कुणाल कुमार जी ने अपनी सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। मुनि जिनेश कमार जी ने अपने उद्बोधन व्यक्त किए। ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित हस्तकला क्रिएटिविटी कांटेस्ट, जैन ज्ञान प्रश्नोत्तरी, तेरापंथ ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में उत्तीर्ण प्रतियोगियों सहित सभी संयोजक, सह-संयोजकों तथा उपस्थित सभी ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों का सम्मान किया गया।

संचालन मुनि परमानंद कमार जी, ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा संगठन मंत्री संजीव एवं महामंत्री अनूप कुमार जैन ने किया।

ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्हों की प्रस्तुति हैदराबाद।

साध्वी निर्वाणश्री जी के हाईटेक सिटी आगमन पर ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्हों द्वारा एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। राजेंद्र धारीवाल के निवास स्थल पर सभागार में हाईटेक सिटी के बालक-बालिकाओं ने

गीत, स्लोगन एवं प्रश्नोत्तर का एक कार्यक्रम किया। जिसकी तैयारी ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं अमिता सेठिया, रंजु बैद, सरोज सुराणा व किरण कुंडलिया ने करवाई।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि संस्कारों की सुरक्षा जीवन की प्रथम अपेक्षा है। ज्ञानशाला बालकों में संस्कारों के साथ ज्ञानार्जन का श्रेयस्कर कार्य संपादित होता है। हाईटेक सिटी में प्रशिक्षिका बहनें इस दृष्टि से जागरूक हैं। अभिभावक भी बच्चों को प्रेरित करें, तो समाज में नई सक्रियता आ सकती है।

साध्वी डॉ योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि बच्चों ने स्लोगन्स व प्रश्नोत्तर के रूप में अच्छी प्रस्तुति दी है। यह एक अच्छी शुरुआत है। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी जैन सेठिया, जैना कोचर, मेधा बैद, कुनवर बैद, विधि बैद, प्रशांत बैद, नैतिक सुराणा, दृष्टि गोलछा, पीयूष सुराणा ने गीत से कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर बाल मंडली ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनमोल सूक्ष्मियाँ प्रस्तुत की। भाई-बहनों ने अच्छी संख्या में उपस्थित होकर साध्वीश्री जी के सान्निध्य का लाभ लिया।

'अध्यात्म से उत्कृष्टता की ओर' कार्यक्रम का आयोजन हैदराबाद।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में टीपीएफ द्वारा 'अध्यात्म से उत्कृष्टता की ओर' कार्यक्रम का आयोजन हाइटेक सिटी में हुआ। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि मेरी व्यक्तिगत डिक्शनरी के शब्दों में एक महत्वपूर्ण शब्द है—एक्सीलेंस। उत्कृष्टता सबको प्रिय होती है, पर जब व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्टता के लिए अध्यात्म को जोड़ लेता है, वह सार्थक जीवन जीता है।

मुख्य वक्ता साध्वी डॉ योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि उत्कृष्टता के लिए सबके मन में एक आकर्षण होता है। अध्यात्म उस आकर्षण में नया बल भरता है। टीपीएफ के कार्यक्रम को दो आयामों में

देखती हूँ। काउंसलिंग उनका सामाजिक संदर्भ है तो अध्यात्म उनकी आत्मिक पुँजी। साध्वी लावण्यप्रभा जी ने गीत का सुमधुर संगान कर पूरे वातावरण को महावीरमय बना दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के समुच्चारपूर्वक हुआ। टीपीएफ के सदस्य चेतना बोथरा, नेहा कुंडलिया, पायल सुराणा, हितेश बोथरा, निखिल कोटेचा ने गीत की प्रस्तुति दी। टीपीएफ, हैदराबाद के अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी का स्वागत किया एवं साध्वीवृद्ध के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं आगामी विहार की मंगलकामना की।

टीपीएफ राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया, राष्ट्रीय नॉलेज बैंक

चेयरमैन दीपक संचेती, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम के प्रायोजक प्रतीक गोलछा, बालचंद लोढ़ा एवं किशन कुमार काबरा का सम्मान पुस्तक बैंट से किया गया।

आगापुरा की कन्याओं ने विदाई गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय श्राविका संजु लोढ़ा ने मधुर गीत का संगान किया। आर०वी० पंचजन्य सोसायटी के अध्यक्ष राजू ने अपनी शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम का संयोजन सहमंत्री चेतना बोथरा ने किया। कार्यक्रम में कई टीपीएफ सदस्य एवं स्थानीय श्राविकों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। टीपीएफ, हैदराबाद कार्यकारिणी सदस्य सुनील बैद ने आभार ज्ञापन किया।

विद्यालय में व्येक्षाध्यान के प्रयोग

नंदीकुंडी।

साध्वी निर्वाणश्री जी अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ नंदीकुंडी जिला परिषद विद्यालय पहुँची। विद्यालय परिसर में साध्वीश्री जी के आगमन पर एक विशेष कार्यक्रम रखा गया। कक्षा ३ से कक्षा १० तक के करीब ४०० विद्यार्थियों को जीवन निर्माण के विविध प्रयोग करवाए।

साध्वी निर्वाणश्री जी के संक्षिप्त उद्बोधन के पश्चात शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को महाप्राण ध्वनि, श्वास प्रेक्षा आदि के प्रयोग सिखाए। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से बड़ी संख्या में बच्चों ने भोजन व नाश्ता आदि करते वक्त टी०वी० आदि न देखने का संकल्प किया।

साध्वी डॉ योगक्षेमप्रभा जी ने जैन मुनि की जीवनचर्या समझाते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी के मिशन व अहिंसा यात्रा की जानकारी दी। उन्होंने साध्वी निर्वाणश्री जी ने भारतभर की पदयात्रा का उल्लेख करते हुए चंद्रस्वर प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। विद्यालय के अध्यापक वर्ग ने अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव करते हुए साध्वीवृद्ध के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

मंगलभावना समारोह के आयोजन

बालोतरा

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में चातुर्मास की परिसंपन्नता पर दो दिवसीय मंगलभावना समारोह मनाया गया। निलेश सालेचा ने बताया कि श्रावक समाज बालोतरा ने सर्वप्रथम गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। आपने कृपा कर साध्वी मंजुयशा जी का चातुर्मास प्रदान करवाया।

साध्वी मंजुयशा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार चातुर्मास पूर्ण किया। यहाँ के भाई-बहनों में बहु उत्साह व भक्ति, समर्पण, सरलता देखने को मिली। यहाँ लोगों में ज्ञान के प्रति जागरूकता व तत्त्वज्ञान में बहुत रुचि है। साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने कहा कि हमने गुरुदृष्टि के अनुसार ४ माह के चातुर्मास में आपको आध्यात्मिक ज्ञान-दर्शन की प्रेरणा प्रदान करने का प्रयास किया। यहाँ के भाई-बहनों में संघ व संघपति के प्रति अटूट श्रद्धा भक्ति देखने को मिली। सभी भाई-बहनों से कहा कि यदि इन ४ माह में हम चारों साध्वियों के द्वारा आपके मन को किसी प्रकार की ठेस पहुँची हो तो खमतखामणा करते हैं।

साध्वी इंद्रप्रभा जी ने कहा कि यह धरती उर्वरा है, यहाँ के लोगों में धर्म के प्रति अच्छी भावना है। सभा अध्यक्ष धनराज औस्तवाल, पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेयुप अध्यक्ष संदीप औस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा, महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, ज्ञानशाला संयोजक राजेश बाफना, अभातेयुप सदस्य मनोज औस्तवाल सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीण एवं सदस्यों ने अपने-अपने विचार रखे। महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीत के द्वारा मंगलकामना की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री महेंद्र बैद ने किया।

गांधीनगर, बैंगलोर

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में ऐतिहासिक चातुर्मास की परिसंपन्नता पर मंगल भावना समारोह का आयोजन तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेयुप भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा ने मंगलाचरण किया।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में एक गुरु, एक गुरु की आज्ञा से विहार एवं चातुर्मास होता है। ५२ वर्ष बाद पुनः दीक्षा की धरा पर आना हुआ। पानी जब तक बहता है निर्मल रहता है। उसी प्रकार साध्वी भी निरंतर गतिशील रहता है, स्व-कल्याण के साथ पर-कल्याण करता है तो साधु रूपी चादर पर कोई दाग नहीं लगता।

साध्वीवृद्ध के प्रति दो दिवसीय मंगलभावना समारोह में तेरापंथ सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, मंत्री गजेंद्र खाटेड़, संगठन मंत्री राजेंद्र भंडारी, प्रचार-प्रसार प्रभारी स्वरूपचंद दांती, पूर्वाध्यक्ष धर्मचंद लुकड़ एवं अभातेयुप उपाध्यक्ष रमेश डागा सहित अनेक पदाधिकारीण एवं सदस्यों ने साध्वीवृद्ध के विहार की मंगलकामना के साथ क्षमायाचना की।



भगवान महावीर का दीक्षा कल्याणक दिवस

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में भगवान महावीर का दीक्षा कल्याणक दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, ताराचंद बरलोटा, सुरेश निमजा, दिनेश धाकड़, नरेंद्र बरमेचा, दीपेश बारोणा, सोमिक जैन आदि ने भगवान महावीर के प्रति कृतज्ञ भाव प्रकट किए। साध्वी प्रेरणाश्री जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी मूदुयशा जी ने गीत एवं साध्वी ऋद्धियशा जी ने कविता प्रस्तुत की।

विविध भारती के रूप में आयोजित

इस कार्यक्रम में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी आर्यन निमजा, प्रगति निमजा, विहान, धैर्य एवं शालीन ने भगवान महावीर एवं चंडकौशिक सर्प की घटना को नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया।

तेममं एवं तेरापंथ कन्या मंडल की बहनों ने भगवान महावीर की संपूर्ण जीवनी को संक्षिप्त रूप से महावीर काव्यधारा के नाम से प्रस्तुत किया। साध्वी प्रियंवदा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के मंत्री रौनक धाकड़ ने किया।

भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस से पूर्व दिन समणी प्रशांतप्रज्ञा जी एवं समणी हर्षप्रज्ञा जी ने साध्वीश्री जी

के दर्शन किए। श्रेणी आरोहण का आदेश प्राप्त कर समागत समणी प्रशांतप्रज्ञा जी का मंगलभावना समारोह आयोजित हो गया। शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' ने उनके जीवन के प्रति मंगलकामना अभिव्यक्त की। साध्वी प्रियंवदा जी, साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मूदुयशा जी एवं साध्वी ऋद्धियशा जी ने मधुर गीत का संगान किया। समणी प्रशांतप्रज्ञा जी ने कृतज्ञता प्रकट की। भगवान महावीर के दीक्षा कार्यक्रम में नितेश धाकड़, अशोक बरलोटा, विनोद बरलोटा, देवेंद्र डागलिया, उत्सव धाकड़, दीपेश सुराणा, सुरेश निमजा, हुल्लास बरलोटा, निर्मला सियाल आदि उपस्थित थे।

भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस का आयोजन

राजलदेसर।

साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में भगवान महावीर का दीक्षा कल्याणक दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल एवं कल्याण मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि मिगसर कृष्णा दसर्वी को भगवान महावीर का दीक्षा कल्याणक दिवस है।

भगवान महावीर ने आज के ही दिन ३० वर्ष की पूर्ण युवावस्था में संसार के सुखों को छोड़कर दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के पश्चात साढ़े बारह वर्षों तक विशिष्ट साधना की।

इस अवसर पर विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया। समारोह में डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनप्रयशा

बनें सहारा - फैलाएं उजियारा का आयोजन

तिरुपुर।

अभातेममं के निर्देशानुसार, तिरुपुर तेममं के तत्त्वावधान में कन्या मंडल की कन्याएँ 'बनें सहारा फैलाएं उजियारा' के अंतर्गत विवेकानंद अनाथ आश्रम गईं। वहाँ पायल कोठारी, प्रतिभा भंसाली, तनिष्ठा भंडारी, वेदिका भंडारी ने बच्चों के साथ वक्त गुजारा। उनके साथ गेम्स खेले एवं विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया।

दैनिक काम में आने वाली चीजें, फल एवं चॉकलेट भेंट किए गए। इस पूरी व्यवस्था में तिरुपुर अध्यक्ष सीमा श्यामसुखा, मंत्री प्रीति भंडारी एवं उपाध्यक्ष नीतू सिंधवी का सहयोग रहा। कन्याओं ने बच्चों से जिजासा की और उनकी जरूरत की चीजों को Joy of Wall पर लिखवाया गया।

रूपांतरण शू जैनिज्म कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं के तत्त्वावधान में मुनि धर्मेश कुमार जी व मुनि स्वस्तिक कुमार जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में रूपांतरण शू जैनिज्म कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था—कषाय।

सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। मंत्री संगीता बोधरा ने बताया कि केंद्र द्वारा निर्देशित यह कार्यशाला अध्यात्ममय है। मुनि धर्मेश कुमार जी स्वामी ने कहा कि क्रोध, मान, माया व लोभ इन चारों को अलग-अलग केंद्रों में ध्यान करने से इनको शांत किया जा सकता है। मुनि स्वस्तिक कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने बताया कि ५ आश्रव में ४ आश्रव से निरंतर पाप लगता है और योग आश्रव से प्रवृत्ति के द्वारा पाप लगता है। अंत में कषाय दूर करके समाज, परिवार व देश को खुशनुमा बनाया जा सकता है।

इस कार्यशाला में संरक्षक नारायणी देवी छाजेड़, पीपी देवी ओस्तवाल, लूणी देवी गोलेच्छा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, अभातेममं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सारिका बागरेचा, पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल, देवी बाई छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष अदि लगभग १०० बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोधरा ने किया।

जीवन-विज्ञान दिवस का आयोजन

सांताकुज, मुंबई।

जीवन-विज्ञान दिवस का आयोजन अणुव्रत समिति, मुंबई के तत्त्वावधान में पञ्चिक हिंदी हाई स्कूल में आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता अंजु चौधरी (जीवन-विज्ञान) प्रशिक्षिका ने कक्षा ८ से ६ के ४९ विद्यार्थियों को सरल, सहज प्रयोग करवाए। अणुव्रत समिति के प्रचार मंत्री मुकेश मादरेचा ने मुख्य वक्ता अंजु चौधरी का परिचय दिया।

तेयुप सांताकुज के अध्यक्ष व अणुव्रत समिति, मुंबई के नशामुक्ति प्रभारी किरण परमार ने स्कूल ऑथॉरिटीज़, टीचर वंदना, अंजु चौधरी व सभी विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया। सांताकुज कन्या मंडल संयोजिका दृष्टि मादरेचा व सह-संयोजिका मिताली सिंधवी की उपस्थिति रही।

विद्यालय की ओर से अंजु का पुष्पगुच्छ देकर व अणुव्रत समिति मुंबई की ओर से सभी को पेन देकर कार्यक्रम का समापन किया।

जीवन-विज्ञान दिवस

बैंगलोर।

अणुव्रत समिति द्वारा शेषाद्री रोड स्थित महारानी वुमेन कॉलेज में जीवन-विज्ञान दिवस आयोजित किया गया। प्रचार-प्रसार मंत्री चंद्रशेखरर्या द्वारा अणुव्रत गीतिका से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने सभी का स्वागत किया। जीवन विज्ञान के संयोजक ललित आच्छा ने कन्नड़ भाषा में जीवन-विज्ञान की विस्तृत जानकारी दी। समिति के पूर्व अध्यक्ष रामलाल गन्ना ने अपने विचार व्यक्त किए। कॉलेज के प्राचार्य डॉ० प्रकाश ने गुरुदेव के गुणगान

करते हुए अणुव्रत समिति की प्रशंसा की। कॉलेज के निर्देशक डॉ० रामचंद्र ने अणुव्रत समिति के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

कॉलेज की अध्यापिका रूपा ने भी अणुव्रत और जीवन-विज्ञान पर प्रकाश डाला। करीब १५० छात्राओं ने कार्यक्रम का लाभ लिया। कार्यक्रम में समिति के उपाध्यक्ष सुरेश मुनोत, संगठन मंत्री निर्मल पोखरना, सदस्य रूपचंद्र देसरला, धर्मेन्द्र बरलोटा, सूरजमल पितलिया, जंवरीलाल दुगड़ व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सुसंस्कृत बच्चे समाज का गौरव है

केंगेरी।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में केंगेरी में संचालित ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों के माध्यम से कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भिक्षु अष्टकम संज्ञान से मंगलाचरण किया गया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि बालक-बालिकाओं में आध्यात्मिक संस्कारों की जागृति देखकर यह सिद्ध हो गया कि ज्ञानशाला की अनिवार्य उपयोगिता है। ज्ञानशाला से वास्तव में न केवल साधु-साधियों के प्रति श्रद्धा भक्ति तथा मंत्र जप के प्रति आस्था जागृत होती है, परंतु अपने अभिभावकों के प्रति भी विनय व सम्पान के भाव बढ़ते हैं। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से बच्चों ने कई संकल्प स्वीकार किए।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्री जी ने आशीर्वाद दिया। गांधीनगर, बैंगलोर तेरापंथ सभाध्यक्ष सुरेश दक ने साध्वीवृदं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

प्रशिक्षिका पूनम दक, नीलम दक एवं सीमा दक ने गीतिका का संगान किया। संचालन पूनम दक ने किया। आभार ज्ञापन सीमा दक ने किया।

अभिनदंन समारोह

जसोल।

मुनि धर्मेश कुमार जी, डॉ० मुनि विनोद कुमार जी, मुनि यशवंत कुमार जी ने आसाड़ा से विहार कर मेन बाजार, ओसवाल समाज जसोल पधारे। तेरापंथ सभा जसोल व अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि नशा जीवन का नाश है, जिंदगी में कभी भी झूठ नहीं बोलना, हमेशा सत्य बोलना चाहिए। परीक्षा में नकल नहीं करनी चाहिए। मुनिश्री द्वारा ध्वनि के प्रयोग करवाए गए।

सेटपॉल स्कूल के प्राचार



तेरुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

निःशुल्क हेल्थ चेकअप कैप

साउथ हावड़ा।

तेरुप द्वारा निःशुल्क हेल्थ चेकअप कैप का आयोजन किया गया। साउथ हावड़ा क्षेत्र के Baidya Health Plus & Diagnostic Centre में हुआ। कैप का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत किया।

इस शिविर में लीवर फंक्शन टेस्ट, कंपलीट ब्लड काउंट, किडनी प्रोफाइल, लिपिड प्रोफाइल, डायबिटीज प्रोफाइल आदि टेस्ट कराए गए। तेरुप के उपाध्यक्ष मनीष कुमार बैद, ज्ञानमल लोडा, सहमंत्री अमित बेगवानी, राहुल दुग्ड, संगठन मंत्री सुमित बैद ने विद्या हेल्थ सेंटर के धर्मेन्द्र जैन का अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया।

हेल्थ चेकअप शिविर के संयोजक प्रवीण कुमार बैंगानी, अधिषेक खटेड़ के अधक परिश्रम से शिविर का सफल आयोजन संभव हुआ। कैप में कुल ६० लोगों ने चेकअप करवाकर कैप को सफल बनाया। उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं का आभार सहमंत्री अमित बेगवानी ने किया।

निःशुल्क मधुमेह एवं ब्लड प्रेशर जॉच शिविर पूर्वाचल-कोलकाता।

तेरुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा सॉल्ट लेक के सिटी सेंटर-९ के पास निःशुल्क मधुमेह एवं ब्लड प्रेशर जॉच शिविर का आयोजन किया गया।

नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से शुभ शुरुआत हुई। स्थानीय लोगों ने मानव सेवा को समर्पित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा प्रदत्त विदित सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। काफी संख्या में लोगों ने शिविर का लाभ लिया।

एटीडीसी पूर्वाचल-कोलकाता के प्रभारी नरेंद्र छाजेड़ के सहयोग से एवं तेरुप के संगठन मंत्री नवीन दुग्ड और परिषद सदस्य अंकित भदानी ने कैप के आयोजन में अपना श्रम नियोजित किया।

रक्तदान शिविर

पूर्वाचल-कोलकाता।

अभातेरुप के निर्देशन में तेरुप द्वारा आयोजित इस सत्र में पंचम रक्तदान शिविर रोहित अपार्टमेंट में किया गया। जिसमें कुल ६३ लोगों का रजिस्ट्रेशन आया और ६० यूनिट रक्त का दान युवा शक्ति ने किया।

शिविर में परिषद के उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, कार्यसमिति सदस्य व एमबीडीडी के संयोजक

रवि दुग्ड, विवेक सुराणा एवं परिषद के निर्वर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, अध्यक्ष विकास सिंधी, पूर्वाचल सभा के अध्यक्ष एवं परामर्शक संजय सिंधी सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित रही।

रक्तदान शिविर के आयोजन में विशेष श्रम व सहयोग प्राप्त हुआ दिलीप चोरड़िया का। शिविर का आयोजन सहयोग मिला रोहित अपार्टमेंट ऑनसै एसेसिएशन का। परिषद सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

सेवा कार्य का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेरुप द्वारा क्षेत्र के नबो जीवन आश्रम में स्वर्गीय हेमराज दुग्ड की प्रथम पुण्यतिथि पर परिवार के सहयोग से सेवा कार्य किया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामूहिक मंगलाचरण के साथ किया। तेरुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। आश्रम के लगभग १०० मानसिक विकलांग रोगियों में सुबह का नाश्ता, मिठाई, फल का वितरण परिषद के युवाओं एवं पारिवारिक जनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोडा, मंत्री गणन दीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, राहुल दुग्ड सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

परिवार से संपत्त दुग्ड ने परिषद के कार्यों की सराहना की और आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक कार्यों के पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया।

जरूरत की सामग्री वितरण

राजराजेश्वरी नगर।

तेरुप द्वारा सुप्रभा एजुकेशनल एवं चेरिटेबल ट्रस्ट उल्लास उपनगर में निवासित लोगों को नाश्ता करवाया एवं जरूरत की सामग्री का वितरण किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। तेरुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने उपस्थित प्रायोजक परिवार सहित सभी का स्वागत किया।

इस अवसर पर कर्नाटक सरकार से अध्यक्षता डॉ श्रीनिवास जी०८० जिला स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण अधिकारी, बैंगलोर एवं तेरुप अध्यक्ष अमित दक एवं मंत्री विकास बांठिया उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया। तत्पश्चात् सभी साथियों ने भोजन वितरण में सहयोग किया। भोजन वितरण में तेरुप साथियों के साथ प्रायोजक सुशील जैन ने सेवा का लाभ लिया। कार्यक्रम के संयोजक पवन बोथरा, आनंद दुग्ड, अशोक भंसाली, मनीष डागा सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यों की सहभागिता रही एवं अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

रक्तदान में सहयोग हेतु तेरुप का सम्मान

विजयनगर।

तेरुप द्वारा अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस के उपलक्ष्य में कर्नाटक सरकार के परिवार कल्याण विभाग एवं लाइयंज ब्लड बैंक के साथ एड्स जागरूकता एवं रक्तदान के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान विजयनगर में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम अध्यक्ष अमित ने स्वागत किया।

लाइयंज टीम एवं उपस्थित अधिकारियों ने एड्स के प्रति जागरूकता, उसकी जाँच को बढ़ावा देने एवं पोजिटिव व्यक्तियों की पहचान के बाद उनके स्वास्थ्य की नियमित जाँच में सहयोग एवं रक्तदान के क्षेत्र में विशेष सहयोग देने हेतु तेरुप, विजयनगर का सम्मान किया गया।

जिला अधिकारी ने अपने विचार व्यक्त किए। एड्स प्रिवेंशन समिति से डॉ० महेश कुमार एस००८० ने कहा कि एड्स पोजिटिव व्यक्तियों की पहचान के बाद उनके स्वास्थ्य की तरह जीने का हक रखता है। किसी के भी साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए।

इस अवसर पर कर्नाटक सरकार से अध्यक्षता डॉ० श्रीनिवास जी०८० जिला स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण अधिकारी, बैंगलोर एवं तेरुप अध्यक्ष अमित दक एवं मंत्री विकास बांठिया उपस्थित रहे।

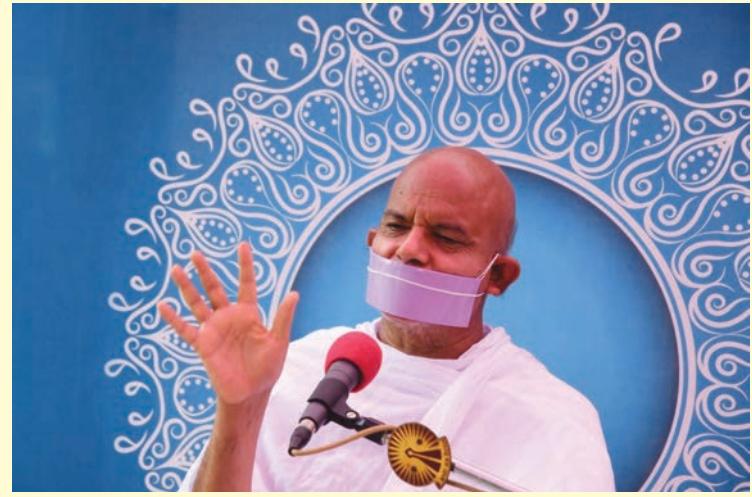
रक्तदान शिविर

साउथ हावड़ा।

मेगा ब्लड डोनेशन अभियान के अंतर्गत अभातेरुप की शाखा तेरुप द्वारा स्वेच्छा रक्तदान शिविर का आयोजन नीलांचल अपार्टमेंट के विजय कुमार फ्लूर के प्रतिष्ठान में किया गया। रक्तदान शिविर का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण की स्थापना के साथ किया। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत करते हुए रक्तदान करने हेतु प्रेरणा दी। परिषद के उपाध्यक्ष मनीष कुमार बैद, ज्ञानमल लोडा, सहमंत्री अमित बेगवानी सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

रक्त संग्रह करने हेतु लाइफ के अरब ब्लड बैंक सहित शासन-प्रशासन का भी आभार व्यक्त किया। रक्तदान शिविर में कुल २३ यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

धर्म साधना से संसार समुद्र तरने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण



अरनेठा, ५ दिसंबर, २०२१

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री

महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १५

किमी का विहार कर राजकीय उच्च

महाविद्यालय अरनेठा में पथारे।

मार्ग में कई लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन का लाभ

लिया। मंगल देशना प्रदान करते हुए

शांतिदूत ने फरमाया कि हमारा यह शरीर

एक प्रकार की नौका बन सकता है।

शरीर नौका है और जीव नौकिक है।

यह संसार जन्म-मरण का एक अरामय-सागर है।

इस संसाररूपी सागर को महर्षि लोग,

मोक्ष के इच्छुक साधना करने वाले व्यक्ति

तर जाते हैं।

मानव जीवन में जो धर्म की साधना

हो सकती है, वह अन्य योनियों में होना

मुश्किल लगता है। इस शरीर को हम नौका

के रूप में काम लें। इस शरीर से साधना

करके संसार समुद्र को तरने का प्रयास

करना चाहिए। नौका संछिद्र है, यानी छिद्र

है, यह भी ध्यान दें। संछिद्र नौका ढूबने

वाली हो सकती है। संछिद्र नौका में

आश्रव-पाप रूपी पानी आने से ये मनुष्य

जन्म ढूब सकता है।

गांव में संतों का आना अच्छी बात

है। संतों की संगत से कोई कल्याण की

तेरुप कार्यकर्ताओं का सम्मान

सांगली।

तेरुप अभातेरुप निर्देशित एम्बीडीडी कार्यक्रम के अंतर्गत अविरल गति से कार्य को निष्पादित करती आ रही है। रक्तदान के क्षेत्र में विशेष कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं का बोम्बे ब्लड ग्रुप ऑर्गेनाइजर महाराष्ट्र द्वारा सांगली ताशगाव में आयोजित राष्ट्रीय सम्मान समारोह में नेशनल अवार्ड से सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि इस



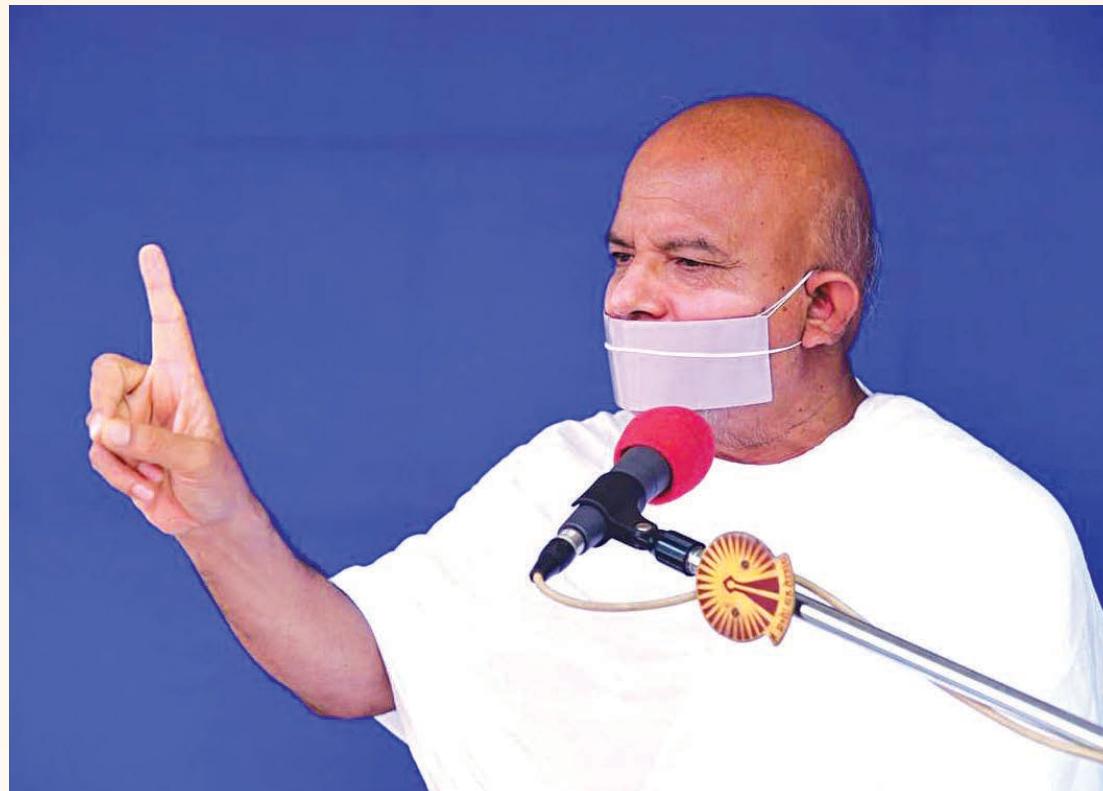
साधु की संगति पाप को हरने वाली होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

गमच, ४ दिसंबर, २०२१

परम पावन आज प्रातः दो दिवसीय शिक्षा नगरी कोटा का प्रवास संपन्न कर १६ किलोमीटर का विहार कर गमच गाँव में पधारे। चरम तीर्थकर भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में अनेक चीजें सुलभ हो सकती हैं, तो कुछ चीजें दुर्लभ भी बताई गई हैं। शास्त्र में बताया गया है कि चार अंग जो परम हैं, वो प्राणी के लिए दुर्लभ होते हैं।

पहली दुर्लभ चीज है—मनुष्यत्व। मनुष्य जन्म दुर्लभ है। ८४ लाख जीवयोनियाँ बताई गई हैं, उनमें जो ये मनुष्य की योनी हैं, वो दुर्लभ है। कितनी योनियों में जीव भ्रमण करता है। अनंत जीव तो ऐसे हैं, जो कभी मनुष्य बने ही नहीं। अव्यवहार गणि के सारे के सारे जीव आज तक वे मनुष्य बने ही नहीं हैं। कुछ जीवों को ही संज्ञा मनुष्य बनने का मौका मिलता है।

मनुष्य जन्म मिल जाए तो दूसरी दुर्लभ चीज है—श्रुति-धर्म का श्रवण मिलना मुश्किल है। श्रुति भी त्यागी संतों के मुख से मिले तो और विशेष बात हो सकती है।



आज के वैज्ञानिक संसाधनों ने श्रुति को सुलभ बना दिया है। फिर भी प्रमाद में आकर व्यक्ति सुनने का प्रयास नहीं करता है।

मान लो श्रुति मिल भी जाए! सुनने के बाद श्रद्धा का होना भी मुश्किल है। श्रद्धा जो मानव जन्म जिनको प्राप्त है। धर्म का श्रवण करने का जिनको मौका

मुनि दर्शन कुमार जी का देवलोकगमन

भीलवाड़ा।

मुनि दर्शन कुमार जी का भीलवाड़ा में २० नवंबर, २०२१ को रात्रि में देवलोकगमन हो गया। मुनि दर्शन कुमार जी का जन्म सन् १६५६ में लावा सरदारशहर के मेहता परिवार में हुआ। विक्रम संवत् २०३६ में आचार्य तुलसी के करकमलों से कांकरोली में उनकी दीक्षा हुई। आप मुनि धर्मचंद जी स्वामी एवं मुनि देवराज जी स्वामी के सिंघाड़े में रहे। मुनि देवराज जी स्वामी के देहावसान के पश्चात उन्हें अग्रणी बना दिया गया और मुनिवर ने अग्रणी के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में विचरण किया। मुनि दर्शन कुमार जी की कला में भी विशेष रुचि थी। रजोहरण, चित्रकला, काष्ठकला आदि में उनकी विशेष रुचि थी। मुनि दर्शन कुमार जी तत्त्वज्ञान में भी अच्छी रुचि रखने वाले संत थे और वह अपने तत्त्वज्ञान को दूसरों को समझाने में विशेष रुचि लेते थे। मुनि दर्शन कुमार जी आचार्यश्री तुलसी जी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति विशेष भक्ति रखने वाले भक्तिमान संत थे। वे अपने आचार्यों को अन्नदाता के नाम से ही संबोधित करते थे। मुनि दर्शन कुमार जी अपनी विशेष कविताओं के माध्यम से श्रावकों के दिल में विशेष जगह रखते थे। भीलवाड़ा चारुमास में आचार्यप्रवर के सानिध्य में रहने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर के भीलवाड़ा से विहार के पश्चात उसी रात्रि में अचानक अस्वस्थ होने के पश्चात मध्य रात्रि में देवलोकगमन हो गया।



साध्वी चंद्रिकाश्री जी का देवलोकगमन

जयपुर।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी का जयपुर में १६ नवंबर, २०२१ को देवलोकगमन हो गया। इनका जन्म २५ दिसंबर, १६७५ पुणे (महाराष्ट्र) में बसंतीदेवी विजय राज मरलेचा के घर में हुआ। विवाह के पश्चात इनमें वैराग्य का बीज अंकुर हुआ और ५ साल तक पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रहने के पश्चात विक्रम संवत् २०६३ माघ शुक्ल दशमी के दिन बीकानेर में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा इन्हें दीक्षित किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ में मुनि प्रबोध कुमार जी (मामा), साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी संवरविभा जी इनके ज्ञातिजन हैं। दीक्षित होने के पश्चात गुरुकुलवास में साध्वी जिनप्रभा जी के साझे में इन्हें रहने का अवसर प्राप्त हुआ।

चंद्रिकाश्री जी द्वारा गर्मों का थोकड़ा, तत्त्व दीपिका, तत्त्वज्ञान—तीन पायदान आदि पुस्तकों के संपादन में भी सक्रिय सहभागिता रही। तत्त्वज्ञान में गहरी पकड़ रखने वाले साध्वी चंद्रिकाश्रीजी दसवेंकालिक, उत्तराध्ययन, निशीथ, आचरांग, भगवती, ठाण, समवाओ, रायपसेण्यिं, पन्नवणा, जीवभिंगम आदि ११ उपांगों का वाचन किया। आपने जैनोलॉजी में एम०१० एवं षट्वर्षीय तत्त्वज्ञान पाठ्यक्रम प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया। आप प्रतिदिन ५०० गाथाओं का स्वाध्याय एवं एक-डेढ़ घंटा नियमित जप अनुष्ठान करती थी। इसके अलावा इन्हें सिलाई, रंगाई, लोच, मुख-वस्त्रिका आदि का निर्माण कार्यों में भी अभिरुचि एवं दक्षता थी।

आपने परमपूज्य आचार्यप्रवर के साथ राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, विहार, बंगल, झारखंड, छत्तीसगढ़, असम, नागालैंड, उड़ीसा, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि प्रांतों एवं नेपाल, भूटान देशों की यात्रा की। १५ वर्ष के पश्चात असाध्य बीमारी के कारण १६ नवंबर, २०२१ को जयपुर के अणुविभा में कालधर्म को प्राप्त हो गई।



अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

